67-सूरत-मुल्क

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '30' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِىۡ بِيَدِهِ الۡمُلۡكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرُ ۙ﴿۱﴾ الَّذِىۡ خَلَقَ الۡمَوۡتَ وَالۡحَيٰوةَ لِيَبۡلُوَكُمۡ
اَيُّكُمۡ اَحۡسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡغَفُوۡرُ ۙ﴿۲﴾ الَّذِىۡ خَلَقَ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِىۡ خَلۡقِ الرَّحۡمٰنِ مِنۡ
تَفٰوُتٍ ؕ فَارۡجِعِ الۡبَصَرَ ۙ هَلۡ تَرٰى مِنۡ فُطُوۡرٍ ﴿۳﴾ ثُمَّ ارۡجِعِ الۡبَصَرَ كَرَّتَيۡنِ يَنۡقَلِبۡ اِلَيۡكَ الۡبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ
حَسِيۡرٌ ﴿۴﴾ وَلَقَدۡ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنۡيَا بِمَصَابِيۡحَ وَجَعَلۡنٰهَا رُجُوۡمًا لِّلشَّيٰطِيۡنِ وَاَعۡتَدۡنَا لَهُمۡ عَذَابَ السَّعِيۡرِ ﴿۵﴾
وَلِلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِرَبِّهِمۡ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ﴿۶﴾ اِذَاۤ اُلۡقُوۡا فِيۡهَا سَمِعُوۡا لَهَا شَهِيۡقًا وَّهِىَ تَفُوۡرُ ۙ﴿۷﴾
تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الۡغَيۡظِ ؕ كُلَّمَاۤ اُلۡقِىَ فِيۡهَا فَوۡجٌ سَاَلَهُمۡ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمۡ يَاۡتِكُمۡ نَذِيۡرٌ ﴿۸﴾ قَالُوۡا بَلٰى قَدۡ جَآءَنَا
نَذِيۡرٌ ۙ فَكَذَّبۡنَا وَقُلۡنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنۡ شَىۡءٍ ۖۚ اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا فِىۡ ضَلٰلٍ كَبِيۡرٍ ﴿۹﴾ وَقَالُوۡا لَوۡ كُنَّا نَسۡمَعُ اَوۡ نَعۡقِلُ
مَا كُنَّا فِىۡۤ اَصۡحٰبِ السَّعِيۡرِ ﴿۱۰﴾ فَاعۡتَرَفُوۡا بِذَنۡۢبِهِمۡ ۚ فَسُحۡقًا لِّاَصۡحٰبِ السَّعِيۡرِ ﴿۱۱﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ
بِالۡغَيۡبِ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّاَجۡرٌ كَبِيۡرٌ ﴿۱۲﴾ وَاَسِرُّوۡا قَوۡلَكُمۡ اَوِ اجۡهَرُوۡا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ ﴿۱۳﴾ اَلَا
يَعۡلَمُ مَنۡ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيۡفُ الۡخَبِيۡرُ ﴿۱۴﴾

आयत नं० 01 से 14

वो (अल्लाह) **बड़ी शान वाला है जिसके क़ब्ज़े में सारी बादशाही है, और वो सब कुछ कर सकता है(01) जिसने मौत और ज़िन्दगी को** (इसलिए) **पैदा किया ताकि तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन अच्छे काम करता है, और वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **बख़्शने वाला** (है कि बुरे कामों पर अज़ाब और अच्छे कामों पर बख़्शिश और सवाब देता) **है(02) उसने सात आसमान ऊपर नीचे पैदा** (किये जैसा हदीस में है कि एक आसमान से ऊपर बहुत दूरी पर दूसरा आसमान है फिर इसी तरह उससे ऊपर तीसरा आसमान है इसी तरह सातों आसमान पैदा) **किये,**

(आगे आसमान की मज़बूती का बयान है कि ऐ देखने वालो) **तुम अल्लाह की इस कारीगरी में कोई कमी न देखोगे,** (सो अब की बार) **फिर नज़र डाल कर देख लो कहीं तुम को कोई कमी दिखाई देती है** (यानी बेसोचे तो बहुत बार देखा होगा अब की बार इसी इरादे से नज़र कर)(03) **फिर बार-बार नज़र डाल कर देख** (अन्जामकार) **नज़र थक हार कर नाकाम होकर तेरी तरफ़ लौट** (आएगी और कोई कमी नज़र न) **आएगी(04) और** (हमारी कुदरत की दलील यह है कि) **हमने नज़दीक वाले आसमान को चराग़ों** (यानी सितारों) **से सजा रक्खा है और हमने उन** (सितारों) **को शैतानों के** (अंगारे) **मारने का सामान भी बनाया है और हमने उन** (शैतानों) **के लिए** (सितारों की मार के सिवा जो कि दुनिया में होता है आख़रत में उन के कुफ़्र की वजह से) **दोज़ख़ का अज़ाब** (भी) **तैयार कर रक्खा है(05) और जो लोग अपने रब** (के एक होने) **का इनकार करते हैं उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब है, और वो बुरी जगह है(06) जब ये लोग उसमें डाले जाएंगे तो उसकी बड़ी ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वो** (इस तरह) **जोश मारती होगी(07) जैसे लगता है कि** (अभी) **गुस्से के मारे फट पड़ेगी,** (और) **जब उसमें कोई गिरोह** (काफ़िरों का) **डाला जाएगा तो उसके रखवाले** (फ़रिशते) **उन लोगों से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई ख़बरदार करने वाला** (पैग़म्बर) **नहीं आया था** (जिसने तुम को इस अज़ाब से डराया हो तो चाहिए था कि इससे डरते और बचने का सामान करते)**(08) वो काफ़िर** (इक़रार करेंगे और) **कहेंगे कि बेशक हमारे पास ख़बरदार करने वाला** (पैग़म्बर) **आया था मगर** (हमारी शामत थी कि) **हमने उसको झुटला दिया और कह दिया कि अल्लाह तआला ने** (हुक्म या किताब) **कुछ नहीं उतारा** (और) **तुम बड़ी ग़लती में पड़े हो(09) और** (वो काफ़िर फ़रिशतों से यह भी) **कहेंगे कि हम अगर सुन लेते या समझ से काम लेते** (यानी पैग़म्बरों के कहने को मान लेते) **तो हम दोज़ख़ वालों में** (शामिल) **न होते(10) इस तरह अपने जुर्म का इक़रार करेंगे तो दोज़ख़ वालों पर लानत है(11) बेशक जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं** (और ईमान लाते और ताबेदारी करते हैं) **उन के लिए बख़शिश और बड़ा सवाब** (तय) **है(12) और तुम लोग चाहे छुपा कर बात कहो या पुकार कर** (उसको सब ख़बर है, क्योंकि) **वो दिलों तक की बातों को जानता है(13)** (और भला) **क्या वो न जानेगा जिसने पैदा किया है, और वो भेदों का जानने वाला** (और) **ख़बरदार है(14)।**

नोटः- हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूरत

तिलावत की यहां तक कि ''अहसनु अमला'' तक पहुंचे तो फ़रमाया कि अहसनु अमला (सबसे अच्छे काम करने वाला) वो आदमी है जो अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों से सबसे ज़्यादा परहेज़ करने वाला हो और अल्लाह की ताबेदारी में हर वक़्त तैयार हो। (क़ुरतबी)

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ﴿١٥﴾ ءَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي
السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ﴿١٦﴾ أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ
فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿١٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ
فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ﴿١٩﴾ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ
لَكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا فِي غُرُورٍ ﴿٢٠﴾ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ
رِزْقَهُ ۚ بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ﴿٢١﴾ أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾ قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ
الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلْ إِنَّمَا
الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَٰذَا الَّذِي
كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ
أَلِيمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ آمَنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ
أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ﴿٣٠﴾

आयत नं० 15 से 30

वो ऐसा (नेमतें देने वाला) **है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को काम का बना दिया** (कि तुम उसमें हर तरह के काम कर सकते हो) **तो तुम उसके रास्तों में चलो** (फिरो) **और अल्लाह की रोज़ी में से** (जो ज़मीन में पैदा की है) **खाओ** (पियो), **और** (खा पीकर उस को याद रखना कि) **उसी के पास दोबारा ज़िन्दा होकर जाना** (है बस चाहिए कि उस की नेमतों का शुक्र अदा करो जो ईमान व ताबेदारी) **है(15) क्या तुम आसमान वाले की इस बात से निडर हो गये कि वो तुम को** (क़ारून की तरह) **ज़मीन में धंसा दे फिर वो ज़मीन थरा थरा**(कर उलट पुलट हो)**ने लगे**

(जिससे तुम ज़मीन में नीचे उतर कर दब जाओ)(16) **या तुम लोग आसमान वाले की इस बात से निडर हो गये कि वो तुम पर** (आद क़ौम की तरह) **एक तेज़ आंधी भेज दे** (जिससे तुम हलाक हो जाओ यानी तुम्हारे कुफ़्र की वजह से ये ही होना चाहिए)**, फिर** (अगर किसी वजह से दुनिया का अज़ाब तुम पर से टल रहा है तो क्या हुआ) **जल्दी ही** (यानी मरते ही) **तुम्हें पता चल जाएगा कि मेरा** (अज़ाब से) **डराना कैसा** (सही) **था**(17) **और इनसे पहले जो लोग हो चुके हैं उन्होंने** (सच्चे दीन को) **झुटलाया था तो** (देख लो उन पर) **मेरा अज़ाब कैसा हुआ** (जिससे कुफ़्र का अन्जाम पता चला बस अगर किसी वजह से यहां अज़ाब टल गया तो दूसरी दुनिया में तो ज़रूर होगा)(18) **क्या उन लोगों ने अपने ऊपर परिन्दों को नहीं देखा कि पर फैलाए हुए** (उड़ते फिरते) **हैं और** (कभी इसी हालत में) **पर समेट लेते** (हैं और दोनों हालतों में ज़मीन पर नहीं गिरते) **हैं,** (और) **सिवाए अल्लाह के उन को कोई थामे हुए नहीं है, बेशक वो हर चीज़ को देख रहा** (है और जिस तरह चाहे उसे चला रहा) **है**(19) (अल्लाह की क़ुदरत के कमाल जानने के बाद अब बताओ कि) **भला अल्लाह के सिवा वो कौन है कि वो तुम्हारी फ़ौज बन कर** (मुसीबतों से) **तुम्हारा बचाव कर सके,** (और) **काफ़िर** (जो अपने माबूदों के बारे में ऐसा समझते हैं) **तो** (वो) **निरे धोके में हैं**(20) (और) **हां** (यह भी बताओ कि) **वो कौन है जो तुम को रोज़ी पहुंचाए अगर अल्लाह तआ़ला अपनी रोज़ी बन्द कर ले** (मगर ये लोग इससे भी असर नहीं लेते) **बल्कि ये लोग शरारत और** (सच्चे दीन से) **नफ़रत पर जम रहे** (हैं यानी तुम्हारे बुत न किसी मुसीबत को दूर कर सकते हैं न कोई नफ़ा पहुंचा सकते) **हैं**(21) **तो** (इसको सुन कर सोचो कि) **जो आदमी** (टेढ़े मेढ़े रास्ते में ठोकरें खाता हुआ और) **मुंह बल गिरता हुआ चल रहा हो वो अपने ठिकाने पर ज़्यादा पहुंचने वाला होगा या वो आदमी** (ज़्यादा पहुंचने वाला होगा) **जो एक सीधे रास्ते पर चल रहा हो** (ये ही हाल मोमिन व काफ़िर का है कि मोमिन के चलने का रास्ता भी सच्चे दीन का रास्ता है और वो चलता भी है सीधा होकर और काफ़िर के चलने का रास्ता भी गुमराही का है और चलने में भी ख़तरनाक जगहों में गिरता जाता है बस ऐसी सूरत में क्या सही ठिकाने पर पहुंचेगा)(22) **आप** (इनसे) **कह दीजिए कि वो ही** (ऐसा क़ुदरत वाला व नेमतें देने वाला) **है जिसने तुम को पैदा किया और तुम को कान और आंखें और दिल दिये,** (मगर) **तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो**(23) (और) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि वो ही है जिसने तुम को ज़मीन में फैलाया और तुम उसी के पास इकट्ठे किये जाओगे**(24) **और ये लोग** (जब क़ियामत का ज़िक्र सुनते हैं तो) **कहते हैं कि यह वादा कब** (पूरा) **होगा अगर तुम** (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और

आप के मानने वाले) **सच्चे हो** (तो बताओ)(25) **आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि इस की जानकारी तो अल्लाह ही को है और मैं तो बस साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूं**(26) **फिर जब उस** (क़ियामत के अज़ाब) **को पास आता हुआ देखेंगे** (यानी जब हिसाब होकर दोज़ख़ में जाने का हुक्म होगा) **तो** (मारे ग़म के) **काफ़िरों के चेहरे बिगड़ जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि ये ही है वो जिसको तुम मांगा करते थे**(27) **आप** (इनसे) **कह दीजिए कि तुम यह बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझ को और मेरे साथ वालों को हलाक कर दे** (जैसा तुम चाहते हो) **या** (हमारी उम्मीद और अपने वादे के हिसाब से) **हम पर रहमत करदे तो** (दोनो सूरतों में अपनी ख़बर लो और यह बताओ कि) **काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा** (यानी हमारी तो जो हालत होगी दुनिया में होगी अन्जाम उस का हर हाल में अच्छा है मगर अपनी कहो कि तुम पर जो मुसीबत आने वाली है उस को कौन रोकेगा)(28) **आप** (उनसे यह भी) **कह दीजिए कि वो बड़ा महरबान है हम उस पर** (उसके हुक्म के मुवाफ़िक़) **ईमान लाए और हम उस पर भरोसा करते हैं** (बस ईमान की बरकत से तो वो हम को आख़रत के अज़ाब से बचाएगा और उस पर भरोसे की बरकत से दुनिया की मुसीबतों को दूर या आसान कर देगा), **सो** (जब तुम पर दर्दनाक अज़ाब आने वाला है और हम इन्शाअल्लाह ईमान की बरकत से उससे बचे रहेंगे तो) **जल्दी ही तुम को पता चल जाएगा** (जब अपने आप को अज़ाब में गरिफ़्तार और हम को उससे बचा हुआ देखोगे) **कि खुली गुमराही में कौन है** (यानी तुम हो जैसा कि हम कहते हैं या हम हैं जैसा कि तुम कहते हो)(29) **आप** (यह) **कह दीजिए कि** (अगर तुम को अपने झूटे ख़ुदाओं पर घमन्ड हो कि ये बचा लेंगे तो) **अच्छा यह बताओ कि अगर तुम्हारा पानी** (जो कुवों में है) **नीचे को** (उतर कर) **ग़ाइब ही हो जाए तो वो कौन है जो तुम्हारे पास सोत का पानी ले आए** (यानी कुवे की सोत को जारी कर दे और ज़मीन की गहराई से पानी ऊपर ले आए बस जब अल्लाह के मुक़ाबिले में किसी को इतनी भी क़ुदरत नहीं तो आख़रत के अज़ाब से बचाने की क्या क़ुदरत होगी बस झूटे माबूदों से कोई उम्मीद बेकार है)(30)।

नोटः- हदीस में है कि जब यह आख़री आयत तिलावत करे तो उस को कहना चाहिए कि "अल्लाहु रब्बुल आ़लमीन" यानी अल्लाह रब्बुल आलमीन ही फिर उस पानी को ला सकता है हमारी किसी की ताक़त नहीं।

सूरत मुल्क की फ़ज़ीलतें

(1) हदीस में है कि यह सूरत अज़ाब को रोकने वाली और अज़ाब से बचा देने वाली है यह अपने पढ़ने वाले को क़ब्र के अज़ाब से बचा लेगी। (क़ुरतबी)

(2) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता है कि सूरत मुल्क हर मोमिन के दिल में हो। (सालबी)

(3) एक हदीस में है कि अल्लाह की किताब में एक ऐसी सूरत है जिसकी आयतें तो सिर्फ़ तीस हैं क़ियामत के दिन यह एक आदमी की सिफ़ारिश करेगी यहां तक कि उस को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर देगी और वो सूरत मुल्क है। (तिरमिज़ी)

68-सूरत-क़लम

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '52' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

نٓ وَ الۡقَلَمِ وَ مَا یَسۡطُرُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ مَاۤ اَنۡتَ بِنِعۡمَۃِ رَبِّکَ بِمَجۡنُوۡنٍ ۚ﴿۲﴾ وَ اِنَّ لَکَ لَاَجۡرًا غَیۡرَ مَمۡنُوۡنٍ ۚ﴿۳﴾ وَ اِنَّکَ لَعَلٰی
خُلُقٍ عَظِیۡمٍ ﴿۴﴾ فَسَتُبۡصِرُ وَ یُبۡصِرُوۡنَ ۙ﴿۵﴾ بِاَیِّکُمُ الۡمَفۡتُوۡنُ ﴿۶﴾ اِنَّ رَبَّکَ هُوَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِیۡلِهٖ ۠ وَ
هُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُهۡتَدِیۡنَ ﴿۷﴾ فَلَا تُطِعِ الۡمُکَذِّبِیۡنَ ﴿۸﴾ وَدُّوۡا لَوۡ تُدۡهِنُ فَیُدۡهِنُوۡنَ ﴿۹﴾ وَ لَا تُطِعۡ کُلَّ حَلَّافٍ
مَّهِیۡنٍ ۙ﴿۱۰﴾ هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِیۡمٍ ۙ﴿۱۱﴾ مَّنَّاعٍ لِّلۡخَیۡرِ مُعۡتَدٍ اَثِیۡمٍ ۙ﴿۱۲﴾ عُتُلٍّۭ بَعۡدَ ذٰلِکَ زَنِیۡمٍ ۙ﴿۱۳﴾ اَنۡ کَانَ ذَا مَالٍ وَّ
بَنِیۡنَ ﴿ؕ۱۴﴾ اِذَا تُتۡلٰی عَلَیۡهِ اٰیٰتُنَا قَالَ اَسَاطِیۡرُ الۡاَوَّلِیۡنَ ﴿۱۵﴾ سَنَسِمُهٗ عَلَی الۡخُرۡطُوۡمِ ﴿۱۶﴾

आयत नं० 01 से 16

नून (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है) **क़सम है क़लम की** (जिससे लोगों की तक़दीर लिखी गई) **और** (क़सम है) **उन** (फ़रिशतों) **के लिखने की** (जो आमाल लिखने वाले हैं)**(01) कि आप अपने रब की महरबानी से दीवाने नहीं** (हैं जैसा ये पैग़म्बरी का इनकार करने वाले कहते हैं मतलब यह कि आप सच्चे नबी) **हैं(02) और बेशक आप के लिए** (इस तबलीग़ के काम पर) **ऐसा बदला** (मिलने वाला) **है जो** (कभी) **ख़त्म होने वाला नहीं** (है इसमें तसल्ली है कि मुख़ालिफ़ों की नागवार बातों को कुछ दिन सहन कर लीजिए कि अन्जाम इसका बड़ा सवाब) **है(03) और** (ऐ पैग़म्बर) **बेशक आप अच्छे अख़लाक़ के ऊंचे दर्जे पर हैं** (और दीवाने में अख़लाक़ का कमाल कहां होता है)**(04) सो** (उनकी बकवास का ग़म न कीजिए जो आप को दीवाना कहते हैं क्योंकि) **जल्दी ही आप भी देख लेंगे और ये लोग भी देख लेंगे(05) कि तुम में** (असल में) **कौन दीवाना था** (बस थोड़े दिनों में ही यह बात खुल कर सामने आ गई कि आप को दीवाना कहने वालों में ज़्यादातर लोग ईमान लाकर आप की ताबेदारी को अपनी ख़ुशनसीबी समझने लगे)**(06) आप का रब उस आदमी को भी जानता है जो उसकी राह से भटका हुआ है और वो** (सीधी) **राह पर चलने वालों को भी**

अच्छी तरह जानता है (इसलिए हर एक को उसके हिसाब से बदला व सज़ा देगा)(07) **तो आप इन झुटलाने वालों का कहना न मानिए** (जैसा कि अब तक नहीं माना)(08) **ये लोग यह चाहते हैं कि आप** (नऊज़ुबिल्लाह अपने तबलीग़ के काम में ज़रा) **ढीले हो जाएं** (यानी बुतपरस्ती को बुरा कहना छोड़ दें) **तो ये भी ढीले हो जाएं** (यानी आप की मुख़ालफ़त छोड़ दें)(09) **और आप** (ख़ास कर) **किसी ऐसे आदमी का कहना न मानें जो बहुत क़समें खाने वाला हो** (मुराद झूटी क़सम खाना है अक्सर झूटे आदमी क़समें खाया करते हैं, और जो अपनी बुरी आदतों की वजह से अल्लाह के नज़दीक और लोगों की नज़रों में) **गिरा हुआ हो**(10) (दिल दुखाने के लिए) **ताना देने वाला हो चुग़लियां लगाता फिरता हो**(11) **नेक काम से रोकने वाला हो गुनाह** (के काम) **करने वाला हो**(12) **सख़्त मिज़ाज हो** (और) **इस** (सब) **के अलावा बदनाम** (भी हो बस आप ऐसे आदमी का कहना न मानिए जो ऐसी आदतों वाला) **हो**(13) (और वो भी सिर्फ़) **इस वजह से कि वो बहुत माल और औलाद वाला** (हो यानी दुनिया में ख़ुशहाल) **हो**(14) (और उसकी यह आदत है कि) **जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये पहले लोगों की कहानियां हैं** (मतलब यह कि आयतों को झुटलाता है)(15) **हम जल्द ही उसकी नाक पर दाग़ लगाएंगे** (यानी क़ियामत में उसके चेहरे और नाक पर उस के कुफ़्र की वजह से कोई निशानी रूसवाई और पहचान की लगा देंगे जिससे वो ख़ूब रूसवा हो। इन आयतों में एक ख़ास शरीर काफ़िर वलीद बिन मुग़य्यरा की बुरी आदतें बयान करके उससे अलग रहने और उसकी बात न मानने का ख़ास हुक्म दिया गया है)(16)

नोटः- एक हदीस में है कि अमल की तराजू में अच्छे अख़लाक़ की बराबर किसी अमल का वज़न नहीं होगा। और अल्लाह गाली गलोज करने वाले बदज़बान से नाराज़ होते हैं। (तिरमिज़ी)
एक हदीस में है कि मुसलमान अपने अच्छे अख़लाक़ की वजह से उस आदमी का दर्जा पा लेता है जो हमेशा रात को इबादत में जागता हो और दिन भर रोज़ा रखता हो। (अबुदाऊद)

إِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا
طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُونَ ﴿١٩﴾ فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ اغْدُوا عَلٰى حَرْثِكُمْ إِنْ
كُنتُمْ صٰرِمِينَ ﴿٢٢﴾ فَانطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخٰفَتُونَ ﴿٢٣﴾ أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَّغَدَوْا عَلٰى

حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا
تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ
اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

आयत नं० 17 से 33

(आगे मक्के वालों को एक क़िस्सा सुना कर उनको अज़ाब से डराया गया है कि) **हमने इन** (मक्के वालों को जो ऐश का सामान दे रक्खा है जिस पर ये घमन्ड कर रहे हैं तो हमने इन) **को आज़माया है** (कि देखें ये नेमतों के शुक्र में ईमान लाते हैं या नाशुक्री व बेक़द्री करके कुफ़्र करते हैं) **जैसा** (इनसे पहले नेमतें देकर) **हमने बाग़ वालों को आज़माया था** (उनका क़िस्सा मक्के वालों में मशहूर था कि उनके बाप का दस्तूर था कि वो अपने बाग़ और खेत की आमदनी का काफ़ी हिस्सा ग़रीबों में ख़र्च किया करता था जब वो मर गया तो बेटों ने ग़रीबों पर ख़र्च करना बेवकूफ़ी समझा इन आयतों में उस क़िस्से का बयान है कि) **जब कि उन लोगों ने आपस में क़सम खाई कि उस** (बाग़) **का फल सुबह चल कर ज़रूर तोड़ लेंगे(17) और** (ऐसा भरोसा हुआ कि) **उन्होंने इन्शाअल्लाह भी नहीं कहा(18) तो उस बाग़ पर आप के रब की तरफ़ से एक फिरने वाला** (अज़ाब) **फिर गया** (और वो एक आग थी हवा में मिली हुई जैसे गर्म लू) **और वो सो रहे थे(19) फिर सुबह को वो बाग़ ऐसा रह गया जैसे कटा हुआ खेत** (कि ख़ाली ज़मीन रह जाती है मगर उनको उसकी कुछ ख़बर न थी)**(20) तो सुबह के वक़्त** (जो सोकर उठे तो) **एक दूसरे को पुकारने लगे(21) कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है(22) फिर वो लोग आपस में चुपके-चुपके बातें करते चले(23) कि आज तुम तक कोई ग़रीब न आने पाए(24) और** (अपने मन में) **उसको न देना अपने बस में समझ कर चले** (कि बाग़ का सारा फल अपने घर ले आएंगे और किसी को न देंगे)**(25) फिर जब** (वहां पहुंचे और) **उस बाग़ को** (उस हालत में) **देखा तो कहने लगे कि हम ज़रूर रास्ता भूल गये हैं** (कहीं और निकल आए यहां तो बाग़ नहीं है फिर दूसरी निशानी देख कर यक़ीन कर लिया कि वो ही जगह है तो उस वक़्त कहने लगे भूले नहीं)**(26) बल्कि** (जगह तो वो ही है लेकिन) **हमारी क़िसमत ही फूट गई** (कि बाग़ का यह हाल हो गया)**(27) उनमें जो आदमी** (कुछ) **अच्छा था वो कहने लगा क्यों मैंने तुम को कहा न था** (कि

ऐसी नीयत मत करो ग़रीबों को देने से बरकत होती है, मगर) **अब** (तौबा और) **तस्बीह क्यों नहीं करते** (ताकि वो गुनाह मुआफ़ हो और इससे ज़्यादा मुसीबत न आजाए)(28) **सब** (तौबा करते हुए) **कहने लगे कि हमारा रब पाक है बेशक हम क़ुसूरवार हैं**(29) **फिर** (आम लोगों की तरह) **एक दूसरे को इल्ज़ाम देने लगे**(30) (फिर सब एक राय होकर) **कहने लगे कि बेशक हम** (सब ही) **हद से निकलने वाले थे** (किसी एक की ख़ता न थी सब मिल कर तौबा कर लो)(31) **शायद** (तौबा की बरकत से) **हमारा रब हमको इससे अच्छा बाग़ बदले में देदे** (अब) **हम अपने रब की तरफ़ लौ लगाते** (हैं यानी तौबा करते) **हैं** (रूहुल मआनी किताब में लिखा है कि उससे अच्छा बाग़ उनको दिया गया)(32) **इसी तरह अज़ाब हुआ करता** (है जब हुआ करता) **है** (यानी ऐ मक्के वालो तुम भी ऐसे अज़ाब के हक़दार हो बल्कि उससे भी ज़्यादा क्योंकि वो अज़ाब तो सिर्फ़ गुनाह पर था और तुम तो कुफ़्र करते हो)**, और आख़रत का अज़ाब इस** (दुनिया के अज़ाब) **से भी बढ़ कर है, क्या अच्छा होता कि ये लोग** (इस बात को) **जान लेते** (और ताकि ईमान ले आते)(33)।

नोटः- उन बाग़ वालों में जो आदमी कुछ अच्छा था वो भी उन लोगों की ग़लत राय पर चला इसलिए अन्जाम उस का भी उन्हीं के साथ हुआ इससे पता चला कि जो आदमी किसी गुनाह से लोगों को रोके मगर वो न रूकें फिर ख़ुद भी उनके साथ लगा रहे और गुनाह में शरीक रहे तो यह भी उन्हीं के हुक्म में होता है उसको चाहिए कि अगर वो नहीं रूके तो ख़ुद अपने आप को उस गुनाह से बचाए।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيمِ ﴿٣٤﴾ أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٦﴾
أَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ﴿٣٧﴾ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ ﴿٣٨﴾ أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بٰلِغَةٌ إِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ أَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيمٌ ﴿٤٠﴾ أَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَآئِهِمْ إِنْ
كَانُوا صٰدِقِينَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾ خٰشِعَةً أَبْصٰرُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سٰلِمُونَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِي وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيثِ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ﴿٤٥﴾ أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِّنْ
مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٦﴾ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ

اِذْ نَادٰى وَ هُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٨﴾ لَوْ لَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَ هُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ
فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَ اِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ يَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ
لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

आयत नं० 34 से 52

बेशक परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास नेमतों की जन्नतें हैं(34) क्या हम कहना मानने वालों को और मुजरिमों को बराबर कर देंगे (यानी अगर काफ़िरों को सज़ा न हो तो ताबेदारों और मुजरिमों में क्या फ़र्क़ रह जाएगा)(35) **तुम को क्या हुआ तुम कैसा फ़ैसला करते हो(36) क्या तुम्हारे पास कोई** (आसमानी) **किताब है जिसमें पढ़ते हो(37) कि उसमें तुम्हारे लिए वो चीज़** (लिखी) **हो जो तुम पसन्द करते हो** (यानी उसमें लिखा हो कि तुम को आख़रत में जन्नत मिलेगी)(38) **या तुमने हमसे क़ियामत तक बाक़ी रहने वाली क़समें ले रक्खी हैं** (जिन में यह बात हो) **कि तुम को वो चीज़ मिलेगी जो तुम तय करोगे** (यानी सवाब और जन्नत)(39) **इनसे पूछिए इन में इसका कोई ज़िम्मेदार है(40) क्या इनके बनाए हुए कुछ** (ख़ुदाई में) **साझी हैं** (कि उन्होंने इन को सवाब देने की ज़िम्मेदारी ली है) **तो उनको चाहिए कि ये अपने उन** (ख़ुदाई के) **साझियों को ले आएं अगर ये सच्चे हैं(41)** (आगे उन लोगों की क़ियामत में रूसवाई का बयान है कि) **जिस दिन** (अल्लाह की तरफ़ से) **जलवा दिखाया जाएगा** (यानी क़ियामत में) **और लोगों को सजदे की तरफ़ बुलाया जाएगा तो ये** (काफ़िर) **लोग सजदा न कर सकेंगे(42)** (और) **उन की आंखें** (शर्म के मारे) **झुकी होंगी** (और) **उन पर रूसवाई छाई होगी, और** (वजह इसकी यह है कि) **ये लोग** (दुनिया में) **सजदे की तरफ़ बुलाए जाया करते थे** (इस तरह कि ईमान लाकर इबादत करें) **और वो सही सालिम** (थे यानी सजदा कर सकते थे मगर इनकार करते) **थे(43) तो मुझ को और जो इस कलाम को झुटलाते हैं उनको** (इसी हाल में) **रहने दीजिए** (यानी अज़ाब में देर होने से ग़म न कीजिए), **हम उन को धीरे-धीरे** (जहन्नम की तरफ़) **लिए जा रहे हैं इस तरह कि उन को ख़बर भी नहीं(44) और** (दुनिया में उन पर अज़ाब न डालने से) **उन को मुहलत देता हूं, बेशक मेरा दांव बहुत पक्का है(45)** (आगे उनके पैग़म्बरी के इनकार पर हैरानी है कि) **क्या आप उन से कुछ बदला मांगते हैं कि वो उस तावान** (के बोझ) **से दबे जाते हैं** (इसलिए आप की ताबेदारी से नफ़रत है)(46) **या उनके पास ग़ैब** (का इल्म) **है कि ये** (उस को यादगारी के लिए)

लिख लिया करते हैं (यानी क्या उनको ख़ुदाई हुक्म ख़ुद किसी तरीक़े से मालूम हो जाते हैं इसलिए नबी की ताबेदारी की ज़रूरत नहीं समझते)(47) **तो आप अपने रब के** (इस) **फ़ैसले पर सब्र से बैठे रहिए** (यानी इन पर अज़ाब अपने वक़्त पर आएगा) **और मच्छली** (के पेट में जाने) **वाले** (पैग़म्बर यूनुस अलैहिस्सलाम) **की तरह न हो जाना** (कि वो अज़ाब न आने से तंग दिल हुए और कहीं चले गये जिनका क़िस्सा पहले आ चुका है, और वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि यूनुस** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अपने रब से) **दुआ की और वो ग़म से घुट रहे** (थे और वो दुआ वो ही है ''लाइलाह् इल्ला अन्ता् सुबहानका् इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन'' जिसकी बरकत से मच्छली के पेट से निकाले गये) **थे(48) अगर उन के रब के अहसान ने उन को संभाला न होता** (यानी दुआ क़ुबूल न की होती) **तो वो** (जिस मैदान में मच्छली के पेट से निकाल कर डाले गये थे उस) **मैदान में बुरी हालत के साथ डाले जाते(49) फिर उनके रब ने उन को** (और ज़्यादा) **रूतबा दिया और उनको** (बड़े दर्जे के) **नेक लोगों में से कर दिया(50) और ये काफ़िर जब क़ुरआन सुनते हैं तो** (सख़्त दुशमनी से) **ऐसे लगते हैं कि जैसे आप को अपनी निगाहों से फिसला कर गिरा देंगे** (यह एक मुहावरा है जैसे बोलते हैं कि वो आदमी इस तरह देखता है जैसे खा जाएगा, मतलब यह कि दुशमनी से आप को बुरी निगाहों से देखते हैं) **और** (उसी दुशमनी से आप के बारे में) **कहते हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **ये दीवाने हैं(51) हालांकि यह क़ुरआन** (जो आप पर उतरा है) **सारे जहान के वास्ते नसीहत है** (और दीवाना आदमी लोगों के सुधार की ऐसी बातें नहीं कर सकता(52)।

नोटः- ऊपर आयतों से साबित हुआ कि क़ियामत का आना और हिसाब-किताब होना और नेक व बुरे को इनाम व सज़ा यह सब अक़्ल से ज़रूरी है। क्योंकि यह इस बात को दुनिया में हर आदमी देखता है और कोई इनकार नहीं कर सकता कि दुनिया में बुरे ज़ालिम और बदकार लोग नफ़े में रहते हैं और मज़े उड़ाते हैं और नेक लोग जो ख़ुदा से डरते हैं वो तंगी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। तो फिर अच्छे बुरे का फ़ैसला कहां होगा। ताकि अच्छों को नेक बदला मिले और बुरों को सज़ा मिले। बस उसके लिए क़ियामत का दिन तय है।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि जिस आदमी को किसी इन्सान की बुरी नज़र लग गई हो उस पर सूरत क़लम की आख़री दो आयतें पढ़ कर दम कर देना उस नज़र के असर को हटा देता है। ये आयतें ''व इंय्यकादुल्लज़ीना् कफ़रू'' से .... आख़िर सूरत तक हैं। (मज़हरी)

69-सूरत-हाक़्क़ा

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '52' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلْحَاقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَاقَّةُ ﴿٣﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا
بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ
حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ
فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا
الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾ فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ
وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ
تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ اِنِّيْ
ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا
هَنِيْٓئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ
كِتٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾ مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّيْ
سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾ اِنَّهٗ
كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا
طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾ لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّهٗ
لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيْلًا مَّا
تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَ اِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَ اِنَّا لَنَعْلَمُ
اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَ اِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَ اِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾

आयत नं० 01 से 52

वो होने वाली चीज़(01) कैसी कुछ है वो होने वाली चीज़(02) और आप को कुछ ख़बर है कि कैसी कुछ है वो होने वाली चीज़ (मुराद इससे क़ियामत है)(03) **समूद और आद** (की क़ौमों) **ने उस खड़खड़ाने वाली चीज़** (यानी क़ियामत) **को झुटलाया(04) तो समूद** (की क़ौम के लोग) **तो ज़ोर की आवाज़ से हलाक कर दिये गये(05) और आद** (की क़ौम के लोग ऐसी) **तूफ़ानी हवा से हलाक किये गये(06) जिसको अल्लाह ने उन पर सात रात और आठ दिन लगातार बरपा रक्खा बस तुम** (अगर वहां मौजूद होते तो) **उस क़ौम को इस तरह गिरा हुआ देखते कि जैसे वो गिरी हुई खजूर के तने** (पड़े) **हैं** (क्योंकि वो बहुत लम्बे क़द वाले थे)**(07) तो क्या तुम को उनमें का कोई नज़र आता है** (यानी कोई नहीं बचा)**(08) और** (इसी तरह) **फ़िरऔन ने और उससे पहले लोगों ने और** (क़ौमे लूत की) **मिली हुई बस्तियों ने बड़े-बड़े जुर्म** (यानी कुफ़्र व शिर्क के काम) **किये(09)** (इस पर उनके पास रसूल भेजे गये) **तो उन्होंने अपने रब के** (उस) **रसूल का कहना न माना** (जो उनकी तरफ़ भेजा गया था और कुफ़्र व शिर्क से बाज़ न आए जिसमें क़ियामत को झुटलाना भी दाख़िल है) **इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें सख़्त पकड़ में ले लिया(10) हमने** (नूह अलैहिस्सलाम के वक़्त में) **जब कि पानी चढ़ आया तुम को** (यानी तुम्हारे बड़ों को जो मोमिन थे और उनके बच जाने से तुम वजूद में आए) **कशती में सवार किया** (और बाक़ी लोगों को डुबा दिया)**(11) ताकि हम इस क़िस्से को तुम्हारे लिए एक यादगार** (सबक़) **बनादें और याद रखने वाले कान इसको याद** (रक्खें मतलब यह कि इस को याद रख कर सज़ा के कामों से बचाव) **रक्खें(12)** (आगे क़ियामत के डर दहशत का बयान है कि) **फिर जब सूर में एक बारगी फूंक मार दी जाएगी** (यानी क़ियामत का पहला सूर फूंका जाएगा)**(13) और** (उस वक़्त) **ज़मीन और पहाड़** (अपनी जगह से) **उठा लिए** (यानी हटा दिये) **जाएंगे फिर दोनो एक बार में चूरा-चूरा कर दिये जाएंगे(14) तो उस दिन वो होने वाली चीज़ हो जाएगी(15) और आसमान फट जाएगा और वो** (आसमान) **उस दिन बिल्कुल कमज़ोर होगा** (जैसा इस वक़्त मज़बूत है)**(16) और फ़रिशते** (जो आसमान में फैले हुए हैं जिस वक़्त फटना शुरू होगा) **उस के किनारों पर आजाएंगे** (इससे मालूम हुआ कि आसमान बीच में से फटेगा)**, और** (ये सब बातें तो पहले सूर के वक़्त की हैं और

आगे दूसरे सूर के क़िस्से हैं कि) **आप के रब के अर्श को उस दिन आठ फ़रिशते उठाए हुए** (होंगे हदीस में है कि अब अर्श को चार फ़रिशते उठाए हुए हैं क़ियामत को आठ फ़रिशते उठाएं) **होंगे(17)** (फिर हिसाब शुरू होगा तो) **जिस दिन तुम** (अल्लाह के सामने हिसाब के वास्ते) **लाए जाओगे** (और) **तुम्हारी कोई बात** (अल्लाह तआला से) **छुपी न होगी(18) फिर** (आमाल नामे उड़ाकर हाथ में दे दिये जाएंगे तो) **जिस आदमी का आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा वो तो** (ख़ुशी के मारे आस पास वालों से) **कहेगा कि मेरा आमाल-नामा पढ़ लो(19) मेरा** (तो पहले ही से) **ऐतक़ाद था कि मुझे अपने हिसाब का सामना करना होगा** (यानी मैं क़ियामत और हिसाब का ऐतक़ाद रखता था बस अल्लाह ने ईमान की बरकत से मुझ पर महरबानी की)**(20) बस वो आदमी मनपसन्द ऐश में होगा(21) यानी ऊंची जन्नत में होगा(22) जिस के फल** (इतने) **झुके** (होंगे कि जिस तरह चाहेंगे लेते) **होंगे(23)** (और हुक्म होगा कि) **खाओ और पियो मज़े के साथ उन कामों के बदले में जो बीते हुए दिनों में** (यानी दुनिया में रहते हुए) **किये हैं(24) और जिस का आमाल नामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा तो वो** (पछताकर) **कहेगा क्या अच्छा होता कि मुझ को मेरा आमाल नामा ही न मिलता(25) और मुझ को यह भी ख़बर न होती कि मेरा हिसाब क्या है(26) क्या अच्छा होता कि** (पहली) **मौत पर ही ख़ातमा हो जाता** (और दोबारा ज़िन्दा न होते जिस पर हिसाब हुआ)**(27) मेरा माल मेरे कुछ काम न आया(28) मेरा सारा ज़ोर** (भी) **मुझसे जाता रहा(29)** (ऐसे आदमी के लिए फ़रिशतों से कहा जाएगा कि) **इस आदमी को पकड़ो और इसके गले में पट्टा डाल दो(30) फिर दोज़ख़ में इसको दाख़िल करो(31) फिर एक ही ज़ंजीर में जिस की लम्बाई सत्तर गज़ है इसको जकड़ दो** (वहां के गज़ की लम्बाई ख़ुदा को ही मालूम है)**(32) यह आदमी ईमान न लाता था अल्लाह पर जो सबसे बड़ा है(33) और** (ख़ुद तो किसी को क्या देता दूसरों को भी) **ग़रीब आदमी को खाना खिलाने की नसीहत न करता था** (मतलब यह कि न अल्लाह के हक़ अदा करता था और न बन्दों के इसलिए अज़ाब का हक़दार हुआ)**(34) इसलिए आज उस आदमी का न कोई यार मददगार है(35) और न उस को कोई खाने की चीज़ नसीब है सिवाए ज़ख़्मों के धोवन के** (यानी कोई अच्छी चीज़ खाने को न मिलेगी)**(36) जिस को सिवाए बड़े गुनाहगारों के कोई न खाएगा(37) बस मैं क़सम खाता हूं उन चीज़ों की भी जिन को तुम देखते हो(38) और उन चीज़ों की भी जिन को तुम नहीं देखते** (मतलब यह कि सारी मख़लूक़ की क़सम है)**(39) कि यह क़ुरआन** (अल्लाह का) **कलाम है एक इज़्ज़तदार फ़रिशते का लाया हुआ** (बस जिस पर यह कलाम उतरा हो वो ज़रूर रसूल है)**(40)**

और यह किसी शाइर का कलाम नहीं है (जैसा कि काफ़िर आप को शाइर कहते थे, मगर) **तुम बहुत कम ईमान लाते हो**(41) **और न किसी काहिन का कलाम है** (जैसा कुछ काफ़िर आप को कहते थे, मगर) **तुम बहुत कम समझते हो**(42) (बल्कि यह) **सारे जहानों के रब की तरफ़ से भेजा हुआ** (कलाम) **है**(43) **और** (आगे कुरआन की सच्चाई पर एक अक़्ली दलील है कि) **अगर ये** (पैग़म्बर) **हमारे ज़िम्मे कुछ** (झूटी) **बातें लगा देते** (यानी जो कलाम हमारा न होता उस को हमारा कलाम कहते और पैग़म्बरी का झूटा दावा करते)(44) **तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ते**(45) **फिर हम उनके दिल की रग काट डालते**(46) **फिर तुम में कोई उनका इस सज़ा से बचाने वाला भी न होता** (दिल की रग काटने से आदमी मर जाता है मुराद इससे क़त्ल है)(47) **और बेशक यह कुरआन परहेज़गारों के लिए नसीहत है**(48) **और** (आगे झुटलाने वालों को धमकी है कि) **हमें मालूम है कि तुम में से कुछ लोग झुटलाने वाले भी हैं** (बस हम उन को इसकी सज़ा देंगे)(49) **और** (इसलिए) **यह कुरआन काफ़िरों के हक़ में पछतावे का सामान है** (क्योंकि उनके लिए झुटलाने की वजह से अज़ाब की वजह हो गया)(50) **यह कुरआन बिल्कुल हक़ और यक़ीनी है** (इसमें किसी शक व शुबह की गुन्जाइश नहीं)(51) **तो** (जिस का यह कलाम है) **अपने** (उस) **रब के नाम की तस्बीह करते रहो जो सब से बड़ा है**(52)।

नोटः- अबूदाऊद (किताब) में हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० की रिवायत हैं कि जब यह आयत ''फ़सब्बिह बिस्मि रब्बिकल अज़ीम'' नाज़िल हुई तो ''रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसको अपने रूकू में रक्खो (यानी रूकू में यह तस्बीह 'सुबहान रब्बियल अज़ीम' पढ़ो) और जब यह आयत ''सब्बिहिस्मा रब्बिकल आला'' नाज़िल हुई तो फ़रमाया कि इसको अपने सजदे में रक्खो (यानी सजदे में यह तस्बीह 'सुबहाना रब्बियल आला' पढ़ो)।'' तो रूकू और सजदे में इन तस्बीहों का तीन बार पढ़ना सुन्नत है''।

70-सूरत-मआरिज

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '44' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۙ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۙ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ؕ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ
الرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿٥﴾ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۙ﴿٦﴾
وَّ نَرٰىهُ قَرِيْبًا ؕ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ﴿٨﴾ وَ تَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ﴿٩﴾ وَ لَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚ﴿١٠﴾
يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِ ۙ﴿١١﴾ وَ صَاحِبَتِهٖ وَ اَخِيْهِ ۙ﴿١٢﴾ وَ فَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ
تُــْٔوِيْهِ ۙ﴿١٣﴾ وَ مَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۙ﴿١٤﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰى ۙ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۚ﴿١٦﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَ
تَوَلّٰى ۙ﴿١٧﴾ وَ جَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٨﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۙ﴿١٩﴾ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۙ﴿٢٠﴾ وَّ اِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۙ﴿٢١﴾ اِلَّا
الْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿٢٢﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۙ﴿٢٣﴾ وَ الَّذِيْنَ فِىْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۙ﴿٢٤﴾ لِّلسَّآئِلِ وَ الْمَحْرُوْمِ ۙ﴿٢٥﴾
وَ الَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ﴿٢٦﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۚ﴿٢٧﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ
مَاْمُوْنٍ ﴿٢٨﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۙ﴿٢٩﴾ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ
مَلُوْمِيْنَ ۚ﴿٣٠﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۚ﴿٣١﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ﴿٣٢﴾ وَ
الَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۙ﴿٣٣﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ؕ﴿٣٤﴾ اُولٰٓئِكَ فِىْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ؕ﴿٣٥﴾

आयत नं० 01 से 35

एक मांगने वाला (इनकार की राह से) **वो अज़ाब मांगता है(01) जो कि काफ़िरों पर आने वाला है** (और) **जिसका कोई हटाने वाला नहीं(02)** (और) **जो अल्लाह की तरफ़ से आएगा जो कि** (आसमानी) **सीढ़ियों का मालिक है(03)** (जिन सीढ़ियों से) **फ़रिशते और** (ईमान वालों की) **रूहें उसके पास** (यानी आसमान में) **चढ़ कर जाती हैं** (और वो अज़ाब) **ऐसे दिन में आएगा जो** (दुनिया के) **पचास हज़ार साल** (की बराबर है मुराद इससे क़ियामत का दिन) **है(04) सो** (जब

अज़ाब का आना साबित है तो) **आप** (उनकी मुख़ालफ़त पर) **सब्र कीजिए और सब्र भी ऐसा जिसमें शिकायत का नाम न हो(05) ये लोग उस दिन को** (क़ियामत पर ईमान न होने की वजह से उसके आने को) **दूर देख रहे हैं(06) और हम** (को उस का आना यक़ीनी मालूम है इसलिए) **उस** (के आने) **को नज़दीक देख रहे हैं(07)** (और वो अज़ाब उस दिन होगा) **जिस दिन** (कि) **आसमान** (रंग में) **तेल की तिलछट की तरह हो जाएगा(08) और पहाड़** (धुनकी हुई) **रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे** (यानी उड़ते फिरेंगे)**(09) और** (उस दिन) **कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा(10) बावजूद इसके कि एक दूसरे को दिखा भी दिये जाएंगे** (यानी एक दूसरे को देखेंगे मगर कोई किसी की हमदर्दी न करेगा), (उस दिन) **मुजरिम** (यानी काफ़िर) **इस बात की तमन्ना करेगा कि उस दिन के अज़ाब से छूटने के लिए बदले में देदे अपने बेटों को(11) और बीवी को और भाई को(12) और कुनबे जिनमें वो रहता था(13) और ज़मीन के सारे लोगों को फिर यह** (बदले में देदेना) **उस को** (अज़ाब से बचाले यानी उस दिन सब को अपनी ही पड़ी होगी कि कल तलक जिन पर जान देने को तैयार था आज उनको अपने फ़ाइदे के लिए अज़ाब के सुपुर्द करने को तैयार होगा अगर ऐसा करना उसको अज़ाब से) **बचाले(14)** (लेकिन) **यह हरगिज़ न होगा** (यानी अज़ाब से रिहाई न होगी, बल्कि) **वो ऐसी भड़कती हुई आग है(15) जो खाल** (तक) **उतार देगी(16)** (और) **वो उस आदमी को** (ख़ुद) **बुलाएगी जिसने** (दुनिया में सच्चे दीन से) **पीठ फेरी होगी और** (ताबेदारी से) **मुंह मोड़ा होगा(17) और** (दूसरों का हक़ मार कर या लालच से माल) **जमा किया होगा** (मतलब यह कि अल्लाह के हक़ और बन्दों के हक़ बर्बाद किये होंगे) **फिर उसको उठा-उठा रक्खा होगा(18) असल में इन्सान कम हिम्मत पैदा हुआ** (है मुराद काफ़िर इन्सान से) **है(19) जब उसको तकलीफ़ पहुंचती है तो बहुत घबरा जाता है(20) और जब उसके पास ख़ुशहाली आजाती है तो** (ज़रूरी हक़ों से) **कंजूसी करने लगता है(21) मगर वो नमाज़ी** (यानी ईमान वाले) **ऐसे नहीं हैं(22) जो अपनी नमाज़ का बराबर ध्यान रखते हैं(23) और जिनके मालों में हक़ तय है(24) मांगने वालों का और न मांगने वालों का** (सब का हक़ है)**(25) और जो क़ियामत के दिन का ऐतक़ाद रखते हैं(26) और अपने रब के अज़ाब से डरने वाले हैं(27)** (और) **सचमुच उनके रब का अज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं(28) और जो अपनी शर्मगाहों को** (हराम से) **बचाने वाले हैं(29) लेकिन अपनी बीवियों से या अपनी** (शरई) **बान्दियों से** (नहीं बचाते) **क्योंकि उन पर** (इसमें) **कोई इल्ज़ाम नहीं(30) हां जो इसके अलावा** (दूसरी जगह बदकारी करना) **चाहें ऐसे लोग** (शरीअत की) **हद से निकलने वाले हैं(31) और जो अपनी**

अमानतों और वादों का ध्यान रखने वाले हैं(32) और जो अपनी गवाहियां ठीक-ठीक अदा करते हैं (उनमें कमी ज़्यादती नहीं करते)(33) **और जो अपनी** (फ़र्ज़) **नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हैं(34) ऐसे लोग जन्नतों में इज़्ज़त के साथ रहेंगे(35)।**

नोटः- ऊपर आयतों में जिस अज़ाब मांगने वाले का ज़िक्र हुआ उस का नाम नज़र बिन हारिस लिखा है जिसने क़ुरआन और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुटलाने में इतनी हिम्मत से काम लिया कि कहने लगा कि या अल्लाह अगर यह क़ुरआन ही हक़ है और आप की तरफ़ से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसादे या कोई दूसरा दर्दनाक अज़ाब भेज दे। अल्लाह ने जंगे बद्र में उसको मुसलमानों के हाथों अज़ाब दिया। (मज़हरी)

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿٣٦﴾ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿٣٧﴾ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ
يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾ كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا
لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا
يَوْمَهُمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَاشِعَةً
اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

आयत नं० 36 से 44

तो (ऐ पैग़म्बर जब कामयाबी और नाकामी की बातें दलील से साबित हो चुकीं तो इन) **काफ़िरों को क्या हुआ कि** (हक़ बातों को झुटलाने के लिए) **तुम्हारी तरफ़ चढ़े चले आ रहे हैं(36) दाहिनी तरफ़ से भी और बाईं तरफ़ से भी टोलियां बना बना कर(37)** (और आगे बयान है कि काफ़िर लोग अपने को हक़ पर समझते थे इसलिए अपने आप को जन्नत का हक़दार मानते थे तो भला) **क्या इनमें से हर आदमी यह तमन्ना रखता है कि वो नेमतों की जन्नत में दाख़िल कर लिया जाएगा(38) यह हरगिज़ न** (होगा क्योंकि दोज़ख़ के काम करते हुए जन्नत का हक़दार कैसे) **होगा,** (आगे क़ियामत में दोबारा पैदा होने का बयान है कि) **हमने उन को ऐसी चीज़ से पैदा किया है जिसकी उनको भी ख़बर है** (यानी वो जानते हैं कि मनी से बने हैं जो जानदार नहीं फिर दोबारा पैदा होने का इनकार करते हैं)(39) **फिर** (अब) **मैं क़सम खाता हूं सितारों के निकलने और छुपने**

की जगहों के मालिक की कि हम बेशक क़ुदरत रखते हैं(40) **कि** (दुनिया ही में) **उनकी जगह उनसे अच्छे लोग ले आएं** (यानी पैदा करदें) **और हम** (इससे) **लाचार नहीं हैं** (तो दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है)(41) **तो आप उनको उसी धन्धे और खेल तमाशों में रहने दीजिए यहां तक कि अपने उस दिन से जा मिलें जिसका उनसे वादा किया जाता है**(42) **जिस दिन ये क़ब्रों से निकल कर इस तरह दौड़ेंगे जैसे किसी इबादत की जगह की तरफ़ दौड़े जाते हैं**(43) (और) **उनकी आंखें** (मारे शर्म के) **नीचे को झुकी होंगी** (और) **उन पर रूसवाई छाई होगी, यह है उनका वो दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था** (जो कि अब आगया)(44)।

नोटः- जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुरआन करीम की तिलावत करते तो काफ़िर लोग टोलियां बनाकर आप के आस पास जमा हो जाते और मज़ाक़ उड़ाते हुए कहते कि अगर ये साहिब जन्नत में जाएंगे तो हम उनसे पहले चले जाएंगे। (रूहुल मआनी)

71-सूरत-नूह

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '28' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ﴿١﴾ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّيْ لَكُمْ
نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اتَّقُوْهُ وَ أَطِيْعُوْنِ ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرْكُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ
مُّسَمًّى ؕ إِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّ نَهَارًا ﴿٥﴾
فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ إِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾ وَ إِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا أَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَ اسْتَغْشَوْا
ثِيَابَهُمْ وَ أَصَرُّوْا وَ اسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾ ثُمَّ إِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ﴿٨﴾ ثُمَّ إِنِّيْٓ أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَ أَسْرَرْتُ لَهُمْ
إِسْرَارًا ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ إِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ﴿١٠﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ﴿١١﴾ وَّ يُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّ
بَنِيْنَ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّ يَجْعَلْ لَّكُمْ أَنْهٰرًا ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾ وَ قَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾
أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾ وَّ جَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّ جَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَ اللّٰهُ
أَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَ يُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾ وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾
لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

आयत नं० 01 से 20

हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) **को उनकी क़ौम के पास** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा कि तुम अपनी क़ौम को** (कुफ़्र के अज़ाब से) **डराओ इससे पहले कि उन पर दर्दनाक अज़ाब आए** (यानी उनसे कहो कि अगर ईमान न लाओगे तो तुम पर दर्दनाक अज़ाब आएगा चाहे आख़रत में यानी दोज़ख़ या दुनिया में भी यानी तूफ़ान)(01) **उन्होंने** (अपनी क़ौम से) **कहा कि ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूं(02)** (और कहता हूं) **कि तुम अल्लाह की इबादत करो** (यानी तौहीद अपनाओ) **और उससे डरो और मेरा कहना मानो(03) वो तुम्हारे गुनाह मुआफ़**

कर देगा और तुम को तय वक़्त (यानी मौत के वक़्त) **तक** (बिना सज़ा) **मोहलत देगा** (यानी ईमान न लाने से जिस अज़ाब का मरने से पहले वादा किया जाता है अगर ईमान ले आए तो वो अज़ाब न आएगा, और बाक़ी मौत के लिए जो) **अल्लाह का तय किया हुआ वक़्त** (है) **जब** (वो) **आजाएगा तो टलेगा नहीं** (यानी मौत तो आना हर हाल में ज़रूरी है ईमान में भी और कुफ़्र में भी लेकिन दोनो हालतों इतना फ़र्क़ है कि एक हालत में आख़रत के अज़ाब के सिवा दुनिया में भी अज़ाब होगा और एक हालत में दोनो अज़ाबों से बचे रहोगे)**, क्या अच्छा होता अगर तुम** (इन बातों को) **समझते(04)** (जब बहुत ज़माने तक समझाने का क़ौम पर कुछ असर न हुआ तो) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह तआला से) **दुआ** (और फ़रियाद) **की या रब मेरे मैंने अपनी क़ौम को रात को भी और दिन को भी** (सच्चे दीन की तरफ़) **बुलाया(05) तो मेरे बुलाने पर** (दीन से) **और ज़्यादा भागते रहे(06) और** (वो भागना यह हुआ कि) **मैंने जब कभी उन को** (सच्चे दीन की तरफ़) **बुलाया ताकि** (उनके ईमान की वजह से) **आप उनको बख़्श दें तो उन लोगों ने** (नफ़रत की वजह से) **अपनी उंगलियां अपने कानों में देलीं** (ताकि हक़ बात सुनें भी नहीं) **और अपने कपड़े** (अपने ऊपर) **लपेट लिए** (ताकि हक़ बात कहने वाले को देखें भी नहीं और कहने वाला भी उनको न देखे) **और** (अपने कुफ़्र व इनकार पर) **जमे रहे और** (मेरा कहना मानने से) **घमन्ड करते रहे(07)** (मगर इसके बावजूद) **फिर** (भी बहुत से तरीक़ों से मैं उनको नसीहत करता रहा जैसा कि) **मैंने उनको** (सच्चे दीन की तरफ़) **ऊंची आवाज़ में बुलाया** (यानी आम नसीहत की)**(08) फिर मैंने उन को** (ख़ास तरह से) **ऐलानिया भी समझाया और उनको चुपके-चुपके भी** (समझाया यानी जितने तरीक़े भी नफ़े के हो सकते थे सभी तरह) **समझाया(09) और** (उस समझाने में) **मैंने** (उन से यह) **कहा कि अपने रब से गुनाह बख़्शवाओ** (यानी ईमान ले आओ ताकि गुनाह बख़्शे जाएं)**, बेशक वो बड़ा बख़्शने वाला है(10)** (अगर तुम ईमान ले आओगे तो आख़रत की नेमत के सिवा) **कि** (बख़्शिश है दुनिया की नेमतें भी तुम को देगा जैसा कि) **तुम पर ख़ूब बारिशें भेजेगा(11) और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा(12)** (मैंने उन से यह भी कहा कि) **तुम को क्या हुआ तुम अल्लाह की बड़ाई का यक़ीन नहीं रखते(13) हालांकि** (उसकी दलीलें मौजूद हैं कि) **उसने तुम को तरह-तरह से** (बनाया कि बेजान चीज़ों यानी ख़ुराक से मनी फिर मनी से कैसे बच्चा और पूरा इन्सान) **बनाया(14)** (और) **क्या तुम को मालूम नहीं कि अल्लाह तआला ने किस तरह सात आसमान ऊपर नीचे पैदा किये(15) और उन में चान्द नूर** (की चीज़) **बनाया और सूरज को** (रौशन) **चराग़** (की तरह)

बनाया(16) और अल्लाह तआला ने तुम को ज़मीन से एक ख़ास तरह पैदा किया (या तो इस तरह कि आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से बनाए गये और या इस तरह कि इन्सान मनी से बना जिस की ख़ुराक ज़मीन से पैदा होती है)(17) **फिर तुम को** (मरने के बाद) **ज़मीन ही में ले जाएगा और** (क़ियामत में फिर उसी ज़मीन से) **तुम को बाहर ले आएगा(18) और अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श** (की तरह) **बनाया(19) ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो(20)।**

नोटः- एक हदीस में है कि तक़दीर के हुक्म को कोई चीज़ नहीं रोक सकती सिवाए दुआ के और किसी की उम्र में ज़्यादती नहीं हो सकती सिवाए मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करने के यानी इन आमाल की वजह से बदलाव हो सकता है। (तिरमिज़ी)

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَ
قَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۚ وَلَا
تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾ مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوا لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَنصَارًا ﴿٢٥﴾ وَ
قَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا
فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

आयत नं० 21 से 28

नूह (अलैहिस्सलाम) **ने** (यह सब कुछ फ़रियाद सुनाने के बाद) **कहा कि या रब मेरे उन लोगों ने मेरा यह कहना नहीं माना और ऐसे लोगों की बात मानी जिन के माल और औलाद ने उन को नुक़सान ही ज़्यादा पहुंचाया** (यानी उन सरदारों के पीछे चले कि जिन्होंने माल और औलाद की वजह से सरकशी की)(21) **और** (जिनके वो पीछे चले वो ऐसे हैं) **जिन्होंने** (हक़ के मिटाने में) **बड़ी-बड़ी चालें चलीं(22) और जिन्होंने** (अपने मानने वालों से यह) **कहा कि तुम अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और** (ख़ासकर) **वद्द को और सुवा को और यग़ूस को और यऊक़ को और नसर को न छोड़ना** (ये बुत ज़्यादा मशहूर थे)(23) **और उन** (सरदार) **लोगों ने बहुत लोगों को** (बहका-बहका कर) **गुमराह कर दिया और** (चूंकि मुझको आप के हुक्म से मालूम

हो गया कि ये अब ईमान न लाएंगे इसलिए यह भी दुआ करता हूं कि) **इन ज़ालिमों की गुमराही और बढ़ा दीजिए** (ताकि अज़ाब के हक़दार हो जाएं)(24) **उन** (का अन्जाम यह हुआ कि उन) **ही अपने गुनाहों की वजह से वो डुबाए गये फिर** (आख़रत में) **दोज़ख़ में दाख़िल किये गये और अल्लाह के सिवा उन को कुछ मददगार भी नसीब नहीं हुए**(25) **और नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (यह भी) **कहा कि या रब मेरे इन काफ़िरों में से ज़मीन पर एक भी रहने वाला न छोड़िए** (बल्कि सब को हलाक कर दीजिए)(26) **अगर आप इनको ज़मीन पर रहने देंगे तो ये लोग आप के बन्दों को गुमराह करेंगे और** (आगे भी) **इनके बदकार और काफ़िर ही औलाद पैदा होगी**(27) (और काफ़िरों के लिए बद्दुआ करने के बाद मोमिनों के लिए दुआ की कि) **या रब मेरे मुझको और मेरे मां बाप को और जो ईमान वाले मेरे घर में दाख़िल हैं उनको और सभी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बख़्श दीजिए, और** (फिर काफ़िरों के लिए बद्दुआ है कि) **इन ज़ालिमों की तबाही और बढ़ा दीजिए** (यानी उनकी रिहाई की कोई सूरत न रहे हलाक ही हो जाएं)(28)।

नोटः- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम उनको इतना मारती कि बेहोश हो जाते तो मरा समझ कर छोड़ देते। होश आने पर फिर क़ौम को समझाते इसी तरह नस्लें गुज़र गईं मगर वो लोग राह पर न आए। नूह अलैहिस्सलाम की उम्र मोजिज़े के तौर पर ज़्यादा हुई। जब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उनको यह ख़बर दी गई कि अब सिवाए आप के मोमिन साथियों के उन लोगों की नस्ल में से कोई ईमान न लाएगा तो यह सोच कर कि ये बाक़ी मुसलमानों को भी गुमराह करेंगे नूह अलैहिस्सलाम ने उनके लिए बद्दुआ की जो ऊपर आयतों में बयान की गई है।

72-सूरत-जिन्न

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '28' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلْ اُوْحِیَ اِلَیَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْۤا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ﴿۱﴾ یَّهْدِیْۤ اِلَی الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَ لَنْ
نُّشْرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾ وَّ اَنَّهٗ تَعٰلٰی جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّ لَا وَلَدًا ۙ﴿۳﴾ وَّ اَنَّهٗ كَانَ یَقُوْلُ سَفِیْهُنَا عَلَی اللّٰهِ
شَطَطًا ۙ﴿۴﴾ وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿۵﴾ وَّ اَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ یَعُوْذُوْنَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ﴿۶﴾ وَّ اَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ یَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿۷﴾ وَّ اَنَّا لَمَسْنَا
السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِیْدًا وَّ شُهُبًا ۙ﴿۸﴾ وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ یَّسْتَمِعِ الْاٰنَ
یَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾ وَّ اَنَّا لَا نَدْرِیْۤ اَشَرٌّ اُرِیْدَ بِمَنْ فِی الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا
الصّٰلِحُوْنَ وَ مِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِی الْاَرْضِ وَ لَنْ نُّعْجِزَهٗ
هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ اَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤی اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ یُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا یَخَافُ بَخْسًا وَّ لَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ
وَ مِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿۱۴﴾ وَ اَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ﴿۱۵﴾

आयत नं० 01 से 15

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पहले शैतान आसमान के नज़दीक पहुंच कर फ़रिशतों की बातें सुनते थे फिर उनमें कुछ अपनी तरफ़ से मिलाकर काहिनों को बता देते थे मगर आप के आने के बाद ख़बरें सुनने से रोक दिये गये। और अगर वहां तक जाना चाहते तो आसमान से अंगारे बरसाए जाते तो उन को फ़िक्र हुई कि यह क्या क़िस्सा है इस बात का पता लगाने के लिए वो ज़मीन में चारों तरफ़ फैल गये कि उनके एक गिरोह ने एक रात में देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में कुरआन पढ़ रहे थे जिन्नात यह कलाम सुनकर समझ गये कि आप पैग़म्बर हैं और यह अल्लाह का कलाम है और वो ईमान ले आए और आकर

अपनी क़ौम को यह क़िस्सा सुनाया और बताया कि इसी वजह से आसमानी ख़बरें सुनने से रोक दिया गया हैः-

(ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन लोगों से) **कह दीजिए कि मेरे पास इस बात की वही आई है कि जिन्नात में से एक जमाअत ने क़ुरआन सुना फिर** (अपनी क़ौम में वापस जाकर) **उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब क़ुरआन सुना है(01) जो सीधा रास्ता बताता है तो हम तो उस पर ईमान ले आए, और हम** (अब) **अपने रब के साथ** (इबादत में) **किसी को शरीक न बनाएंगे(02) और** (उन्होंने आपस में कहा कि) **हमारे रब की बहुत ऊंची शान है उसने न किसी को बीवी बनाया और न औलाद** (और ऐसा होना समझ से परे है)**(03) और हम में जो बेवक़ूफ़ हैं वो अल्लाह की शान में हद से बढ़ी हुई बातें कहते थे** (यानी शिर्क की बातें जैसे बीवी और औलाद बताना)**(04) और हमने** (पहले) **यह समझा था कि इन्सान और जिन्नात अल्लाह के बारे में कभी झूट बात न कहेंगे** (क्योंकि अक्सर जिन्नात व इन्सान शिर्क करते थे हम समझे कि अल्लाह की शान में इतने लोग झूट पर एक राय न हुए होंगे बस हमने भी उसी तरीक़े को अपना लिया)**(05) और** (एक बात यह कि) **बहुत से लोग इन्सानों में से ऐसे थे कि वो जिन्नात में से कुछ लोगों की पनाह लिया करते थे तो उन आदमियों ने जिन्नात को और सर चढ़ा दिया था** (कुछ लोग पहले जब कहीं सुनसान जंगल में जाते तो इस ऐतक़ाद से कि जिन्नात के सरदार हमारी हिफ़ाज़त करेंगे यह कहा करते थे कि मैं इस जंगल के सरदार की पनाह लेता हूं उसकी क़ौम के बेवक़ूफ़ शरीर लोगों से इस तरह वो समझते कि हम जिन्नात के सरदार तो थे ही अब इन्सान भी बड़ा समझने लगे इस तरह उनकी गुमराही और बढ़ गई)**(06) और** (यह भी कहा कि) **वो** (यानी इन्सान भी) **ये ही समझते थे जैसा तुम समझते थे कि अल्लाह किसी को भी मरने के बाद दूसरी ज़िन्दगी नहीं देगा(07) और** (यह भी कहा कि) **हमने आसमान** (की ख़बरों) **की** (पहले की तरह) **तलाशी लेना चाहा तो हमने उसको सख़्त पहरा** (यानी पहरेदार फ़रिशतों) **और अंगारों से भरा हुआ पाया** (यानी अब पहरा हो गया कि कोई जिन्न आसमानी ख़बर न ले जाने पाए और जो जाए वो अंगारे से मारा जाए)**(08) और** (इससे पहले) **हम आसमान** (की ख़बर सुनने) **की जगहों में** (ख़बर) **सुनने के लिए जा बैठा करते थे, लेकिन जो कोई अब सुनना चाहता है तो अपने लिए एक तैयार अंगारा पाता** (है मतलब यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने पैग़म्बरी दी है इसलिए ख़बरों की चोरी का दरवाज़ा बन्द कर दिया) **है(09) और हम नहीं जानते कि** (इन नये पैग़म्बर के

भेजने से) **ज़मीन वालों को कोई तकलीफ़ पहुंचाने का इरादा है या उनके रब ने उनको सीधा रास्ता दिखाने का इरादा किया है** (यानी मालूम नहीं कि लोग ईमान लाकर सीधा रास्ता पा जाएंगे या मुख़ालफ़त करके सज़ा पाएंगे)(10) **और हम में** (पहले से भी) **कुछ नेक** (होते आए) **हैं और कुछ दूसरी तरह के** (होते आए) **हैं,** (बस) **हम अलग-अलग तरीक़ों पर थे** (इसी तरह इन नबी की ख़बर सुन कर अब भी हम में दोनो तरीक़े के लोग मौजूद हैं यानी कुछ लोगों का ईमान न लाना कुछ हैरानी की बात नहीं)(11) **और** (हमारा तरीक़ा तो यह है कि) **हमने समझ लिया है कि हम ज़मीन** (के किसी हिस्से) **में** (जाकर) **अल्लाह तआ़ला को हरा नहीं सकते और न** (और कहीं) **भाग कर उसको हरा सकते हैं** (यानी अगर कुफ़्र करेंगे तो अल्लाह तआ़ला के अज़ाब से बच नहीं सकते)(12) **और हमने जब हिदायत की बात सुन ली तो हमने उसका यक़ीन कर लिया, तो** (हमारी तरह) **जो आदमी अपने रब पर ईमान ले आएगा तो उसको न किसी कमी का डर होगा न ज़्यादती का** (कमी यह कि उसकी कोई नेकी लिखने से रह जाए और ज़्यादती यह कि गुनाह ज़्यादा लिख दिया जाए)(13) **और हममें से कुछ तो** (इन बातों को समझ कर) **मुसलमान** (हो गये) **हैं और कुछ हम में** (पहले की तरह) **बेराह हैं, तो जो आदमी मुसलमान हो गया उन्होंने तो भलाई का रास्ता ढूंड लिया** (जिस पर सवाब मिलेगा)(14) **और जो बेराह हैं वो दोज़ख़ के ईंधन हैं**(15)।

وَّ اَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ۙ﴿۱۶﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَ مَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ
يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ﴿۱۷﴾ وَّ اَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۙ﴿۱۸﴾ وَّ اَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا
يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ؕ﴿۱۹﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَ لَاۤ اُشْرِكُ بِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۰﴾ قُلْ اِنِّيْ لَاۤ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا
رَشَدًا ﴿۲۱﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ۬ وَّ لَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۙ﴿۲۲﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِسٰلٰتِهٖ ؕ
وَ مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ﴿۲۳﴾ حَتّٰۤى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ
اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّ اَقَلُّ عَدَدًا ﴿۲۴﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِيْۤ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْۤ اَمَدًا ﴿۲۵﴾ عٰلِمُ
الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ۙ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ
رَصَدًا ۙ﴿۲۷﴾ لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَ اَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿۲۸﴾

आयत नं० 16 से 28

और (ऐ पैग़म्बर मक्के वालों से कहो कि मुझ पर) **यह** (वही भी आई है) **कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर आजाते तो हम उनको ख़ूब पानी पिलाते** (यानी पानी बरसाते)(16) **ताकि इसमें उनको आज़माएं** (कि नेमत का शुक्र करते हैं या नाशुक्री व नाफ़रमानी करते हैं मतलब यह कि अगर मक्का वाले शिर्क न करते तो उन पर अकाल न आता), **और जो आदमी** (भी) **अपने रब की याद** (यानी ईमान व ताबेदारी) **से मुंह फेरेगा अल्लाह तआला उसको सख़्त अज़ाब में दाख़िल करेगा**(17) **और** (एक यह है कि) **जितने सजदे हैं वो सब अल्लाह का हक़ हैं** (यानी यह जाइज़ नहीं कि कोई सजदा अल्लाह को किया जाए और कोई सजदा दूसरे को जैसा मुशरिक लोग करते थे) **तो अल्लाह के साथ किसी की इबादत मत करो**(18) **और जब अल्लाह का ख़ास बन्दा** (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **अल्लाह की इबादत करने खड़ा होता है तो ये** (काफ़िर) **लोग उस बन्दे पर** (ऐसे) **भीड़ लगा**(ने को खड़े हो जा)**ते हैं** (जैसे अब हमला कर देंगे)(19) **आप** (ऐ पैग़म्बर उनसे) **यह कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूं और उसके साथ किसी को साझी नहीं करता** (और यह कोई दुशमनी रखने की बात नहीं)(20) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि न तुम्हारा कोई नुक़सान मेरे बस में है और न कोई भलाई** (यानी तुम जो ऐसी मांग करते हो कि अगर आप रसूल हैं तो हम पर अज़ाब लादें तो यह मेरे बस में नहीं इसी तरह क़ुरआन में कुछ बदल दो तो हम आप को रसूल मानलें(21) **आप कह दीजिए कि** (अगर मैं अल्लाह न करे ऐसा करूं तो) **मुझ को अल्लाह** (के गुस्से) **से कोई नहीं बचा सकता और न मैं उसके सिवा कोई पनाह** (की जगह) **पा सकता हूं**(22) **लेकिन अल्लाह की तरफ़ से बात पहुंचाना और उसके पैग़ामों का अदा करना यह मेरा काम है, और जो अल्लाह और उसके रसूल का कहना नहीं मानते तो बेशक उन लोगों के लिए जहन्नम की आग है जिसमें वो सदा-सदा रहेंगे**(23) (मगर ये काफ़िर लोग बाज़ न आएंगे) **यहां तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है** (यानी अल्लाह का अज़ाब) **उस वक़्त पता चल जाएगा कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और किसकी गिनती कम है** (यानी काफ़िर ही ऐसे होंगे जिनके कोई काम न आएगा)(24) **आप** (उनसे क़ियामत के आने के सवाल के जवाब में) **कह दीजिए कि मुझ को मालूम नहीं कि जिस चीज़ का तुम से वादा किया जाता है वो नज़दीक** (आने वाली) **है या मेरे रब ने उसके लिए कोई लम्बी मुद्दत तय कर रक्खी है** (लेकिन वो हर हाल में आएगी ज़रूर)(25) **सारे भेद जानने वाला वो ही है तो** (जो भेद यानी ग़ैब का इल्म किसी वजह से बताना

नहीं होता) **वो अपने** (ऐसे) **भेद की किसी को ख़बर नहीं** (करता बस क़ियामत के वक़्त की ख़बर ऐसी ही है क्योंकि वो पैग़म्बरी के इल्मों में से नहीं जिनको जान कर सवाब कमाया जाता है इसलिए ऐसे भेद पर किसी को ख़बर नहीं) **करता(26) हां मगर अपने चुने हुए किसी पैग़म्बर को** (अगर किसी ऐसे इल्म की ख़बर करना चाहता है जो पैग़म्बरी के इल्म से हो जैसे शरीअत के हुक्म) **तो** (इस तरह ख़बर देता है कि) **उस पैग़म्बर के आगे और पीछे** (यानी चारों तरफ़ वही के वक़्त) **पहरेदार फ़रिशते भेज देता** (है ताकि वहां शैतानों का गुज़र न हो जो कि वही को फ़रिशते से सुनकर और किसी से जा कहें और न कोई वसवसा डाल सकता) **है(27)** (और यह इन्तिज़ाम इसलिए किया जाता है) **ताकि अल्लाह तआ़ला जानले कि उन फ़रिशतों ने अपने रब के पैग़ाम** (रसूल तक हिफ़ाज़त से) **पहुंचा दिये** (और उसमें किसी का अमल दख़ल नहीं हुआ) **और अल्लाह तआ़ला उन** (पहरेदारों) **के सारे हालात को घेरे में लिए हुए हैं और उसको हर चीज़ की गिनती मालूम** (है बस वही के सब हिस्से एक-एक करके उसको मालूम हैं और वो सब की पूरी हिफ़ाज़त करता) **है(28)।**

नोटः- इल्मे ग़ैब वो इल्म है जिसे अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई दूसरा नहीं जानता न कोई पैग़म्बर न कोई फ़रिशता। और जो ग़ैब की बातें पैग़म्बरों को वही से बताई गईं वो इल्मे ग़ैब नहीं बल्कि ग़ैब की ख़बरें हैं। कुछ लोग ग़ैब की ख़बरों को इल्मे ग़ैब समझ कर बहसें करते हैं उसकी वजह सही इल्म का न होना है।

73-सूरत-मुज़म्मिल

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '20' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ ۝١ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ ۝٢ نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ ۝٣ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَ رَتِّلِ الْقُرْاٰنَ
تَرْتِيْلًا ؕ ۝٤ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ۝٥ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ اَقْوَمُ قِيْلًا ؕ ۝٦ اِنَّ لَكَ فِي
النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ ۝٧ وَ اذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَ تَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ؕ ۝٨ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ۝٩ وَ اصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ اهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ۝١٠ وَ ذَرْنِيْ وَ الْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَ
مَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ۝١١ اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّ جَحِيْمًا ۙ ۝١٢ وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ عَذَابًا اَلِيْمًا ۗ ۝١٣ يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَ
الْجِبَالُ وَ كَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ۝١٤ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى
فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ؕ ۝١٥ فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ۝١٦ فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ۖ ۝١٧ اِۨالسَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ۝١٨ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ
اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝١٩ ع

आयत नं० 01 से 19

नोटः- काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुरे-बुरे नामों से पुकारा किसी ने दीवाना कहा किसी ने काहिन कहा किसी ने जादूगर कहा तो एक बार आप दुखी होकर कपड़ों में लिपट कर लेट गये इसलिए आप को ख़ुश करने के लिए अल्लाह तआला ने आप को उसी हालत में पुकारा कि.....

ऐ कपड़ों में लिपटने वाले (नबी काफ़िरों की बातों का ज़्यादा ग़म न करो बल्कि अल्लाह की तरफ़ ध्यान लगाओ)**(01) रात को** (नमाज़ में) **खड़े रहा करो थोडी सी रात(02) यानी आधी रात** (कि उसमें आराम करो) **या उस आधी से कुछ कम कर दो** (यानी आधी रात से कम इबादत करो

और आधी रात से ज़्यादा आराम करो जैसे एक तिहाई रात)(03) **या आधी से कुछ बढ़ा दो** (यानी आधी से ज़्यादा इबादत और आधी से कम आराम करो जैसे दो तिहाई रात) **और** (इस रात की इबादत में) **कुरआन को ख़ूब साफ़-साफ़ पढ़ो** (कि एक-एक हर्फ़ अलग-अलग हो और ये ही हुक्म नमाज़ के अलावा तिलावत का भी है)(04) **हम तुम पर एक भारी कलाम उतारने वाले हैं** (मुराद कुरआन मजीद है कि जिसके उतरने के वक़्त आप की हालत बदल जाती थी कि सर्दियों में भी आप पसीना-पसीना हो जाते थे और इसलिए भी भारी कहा कि कुरआन के हुक्मों की पाबन्दी भारी है)(05) **बेशक रात का उठना असर रखता है** (नफ़्स के) **कुचलने में और बात अच्छी तरह निकलती है**(06) (और) **बेशक तुम को दिन में बहुत काम रहता है**(07) **और** (रात के सिवा दूसरे वक़्तों में भी) **अपने रब का नाम याद करते रहो और सब से अलग होकर उसी की तरफ़ ध्यान लगाओ**(08) **वो पूरब और पच्छिम का मालिक है उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं तो उसी को अपने सब काम सौंप दो**(09) **और ये** (काफ़िर) **लोग जो बातें करते हैं उन पर सब्र करो और ख़ूबसूरती के साथ उनसे अलग हो जाओ** (अलग होना यह कि कोई वास्ता न रक्खो और ख़ूबसूरती यह कि उनकी शिकायत व बदला लेने की फ़िक्र में मत पड़ो)(10) **और** (आगे उनके अज़ाब की ख़बर देकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि) **मुझ को और इन झुटलाने वालों ऐश आराम में रहने वालों को** (इसी हालत पर) **छोड़ दो** (यानी रहने दो) **और इन लोगों को थोड़े दिन और मुहलत देदो** (यानी कुछ दिन और सब्र कर लीजिए जल्दी ही उन को सज़ा होने वाली है)(11) **हमारे यहां बेड़ियां हैं और दोज़ख़ है** (उनके लिए)(12) **और गले में फंसने वाला खाना है और दर्दनाक अज़ाब है**(13) (और यह सज़ा उस दिन होगी) **जिस दिन ज़मीन व पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़** (चूरा-चूरा होकर उड़ता हुआ) **रेत हो जाएंगे**(14) (आगे झुटलाने वालों को कहा गया है कि) **बेशक हमने तुम्हारे पास एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुम पर** (क़ियामत के दिन) **गवाही देंगे** (कि उन लोगों ने तबलीग़ के बाद क्या बरताव किया) **जैसा हम ने फ़िरऔन के पास रसूल भेजा था**(15) **फिर फ़िरऔन ने उस रसूल का कहना न माना फिर हमने उस को सख़्त पकड़ में ले लिया**(16) **तो अगर तुम** (भी रसूल के आने के बाद नाफ़रमानी और) **कुफ़्र करोगे तो** (इसी तरह एक दिन तुम को भी मुसीबत भुगतना पड़ेगी बस वो मुसीबत का दिन आने वाला है तो तुम) **उस दिन** (की मुसीबत) **से कैसे बचोगे जो** (सख़्त और बड़ा होने की वजह से) **बच्चों को बूढ़ा कर देगा**(17) **जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उस का वादा ज़रूर पूरा होकर रहेगा** (ऐसा नहीं है कि वो वक़्त टल जाए)(18) **यह एक नसीहत** (की बात) **है**

जिसका जी चाहे अपने रब की तरफ़ (जाने वाला) **रास्ता अपनाए**(19)।

नोटः- इशा की नमाज़ के बाद हर नमाज़ तहज्जुद में दाख़िल है और सुन्नत तरीक़ा यह है कि इशा के बाद सोकर उठने के बाद रात के आख़री हिस्से में नमाज़ अदा की जाए।

मसअलाः- यहां मालूम हुआ कि कुरआन का सिर्फ़ पढ़ना ही काफ़ी नहीं बल्कि तरतील से पढ़ना असल है जिसमें हर-हर लफ़्ज़ साफ़-साफ़ और सही अदा हो। और रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसी तरह तरतील से पढ़ते थे। जैसा कि उम्मे सलमा रज़ि० की हदीस में आया है।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٠﴾

आयत नं० 20

(ऐ पैग़म्बर) **आप का रब जानता है कि आप और आप के साथ वालों में से कुछ आदमी** (कभी) **दो तिहाई रात के क़रीब और** (कभी) **आधी रात और** (कभी) **तिहाई रात** (तहज्जुद की नमाज़ में) **खड़े रहते हैं, और रात और दिन का पूरा अन्दाज़ा अल्लाह ही कर सकता है, उस को मालूम है कि तुम उसका ठीक हिसाब नहीं रख सकोगे** (और इसलिए तुम को ज़्यादा महनत उठानी पड़ती है) **तो** (इस वजह से) **उसने तुम्हारे हाल पर महरबानी की** (और उस रात की इबादत के फ़र्ज़ होने के हुक्म को बदल दिया जो शुरू में बताया गया था) **तो** (अब) **तुम लोग जितना कुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया** (करो मतलब यह कि अब तहज्जुद की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं रही अगर चाहो पढ़ लिया) **करो, उस को** (यह भी) **मालूम है कि कुछ आदमी तुम में बीमार होंगे और कुछ रोज़गार की तलाश में मुल्क में सफ़र करेंगे और कुछ अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे** (इसलिए भी इस हुक्म को बदल दिया क्योंकि उन हालतों में तहज्जुद और उसके वक़्तों की पाबन्दी मुश्किल थी), **तो** (इसलिए भी तुम को इजाज़त है कि अब) **तुम लोग जितना**

क़ुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो और (भले ही तहज्जुद का हुक्म बदल दिया गया मगर ये हुक्म अब भी बाक़ी है यानी यह कि) **नमाज़** (फ़र्ज़) **की पाबन्दी रक्खो और ज़कात देते रहो और अल्लाह को अच्छी तरह** (यानी सच्चे मन से) **क़र्ज़ दो** (यानी नेक कामों में ख़र्च करो), **और जो नेक काम अपने लिए** (आख़िरत का ख़ज़ाना बनाकर) **आगे भेज दोगे उसको अल्लाह के पास पहुंच कर उससे अच्छा और सवाब में बड़ा पाओगे** (यानी दुनिया के कामों में ख़र्च करने से जो नफ़ा मिलता है ख़ैरात करने से उससे ज़्यादा बेहतर मिलेगा), **और अल्लाह से गुनाह मुआफ़ कराते रहो, बेशक अल्लाह तआला बहुत बख़्शने वाला बहुत महरबान है** (20)।

नोटः- हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा कि तुम में ऐसा कौन है जो अपने माल के मुक़ाबिले अपने वारिस के माल से ज़्यादा मुहब्बत रक्खे। सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम में कोई भी ऐसा नहीं जो अपने वारिस के माल की मुहब्बत ख़ुद अपने माल से ज़्यादा रक्खे। आपने फ़रमाया सोच समझ कर बात करो सहाबा ने अर्ज़ किया कि हमें तो इसके सिवा कोई दूसरी सूरत मालूम नहीं आप ने फ़रमाया (जब यह बात है तो समझ लो कि) तुम्हारा माल वो है जो तुमने अपने हाथ से अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया और जो रह गया वो तुम्हारा माल नहीं बल्कि तुम्हारे वारिस का माल है। (इब्ने कसीर)

और एक हदीस में है कि दुनिया छोड़ देना इसका नाम नहीं कि तुम अपने ऊपर अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को हराम कर लो या जो माल तुम्हारे पास हो उसे बेबात उड़ा दो। बल्कि दुनिया छोड़ देना इसका नाम है कि तुम्हारा भरोसा अल्लाह तआला के हाथ में जो चीज़ है उस पर ज़्यादा हो उसके मुक़ाबिले में जो तुम्हारे हाथ में है। (मज़हरी)

74-सूरत-मुदस्सिर

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '56' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا الۡمُدَّثِّرُ ۙ﴿۱﴾ قُمۡ فَاَنۡذِرۡ ۪ۙ﴿۲﴾ وَ رَبَّكَ فَكَبِّرۡ ۪ۙ﴿۳﴾ وَ ثِيَابَكَ فَطَهِّرۡ ۪ۙ﴿۴﴾ وَ الرُّجۡزَ فَاهۡجُرۡ ۪ۙ﴿۵﴾ وَ لَا تَمۡنُنۡ تَسۡتَكۡثِرُ ۪ۙ﴿۶﴾
وَ لِرَبِّكَ فَاصۡبِرۡ ؕ﴿۷﴾ فَاِذَا نُقِرَ فِی النَّاقُوۡرِ ۙ﴿۸﴾ فَذٰلِكَ يَوۡمَئِذٍ يَّوۡمٌ عَسِيۡرٌ ۙ﴿۹﴾ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ غَيۡرُ يَسِيۡرٍ ﴿۱۰﴾ ذَرۡنِیۡ وَ
مَنۡ خَلَقۡتُ وَحِيۡدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ جَعَلۡتُ لَهٗ مَالًا مَّمۡدُوۡدًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ بَنِيۡنَ شُهُوۡدًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ مَهَّدۡتُّ لَهٗ تَمۡهِيۡدًا ۙ﴿۱۴﴾ ثُمَّ يَطۡمَعُ
اَنۡ اَزِيۡدَ ۙ﴿۱۵﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيۡدًا ؕ﴿۱۶﴾ سَاُرۡهِقُهٗ صَعُوۡدًا ؕ﴿۱۷﴾ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَ قَدَّرَ ۙ﴿۱۸﴾ فَقُتِلَ كَيۡفَ قَدَّرَ ۙ﴿۱۹﴾
ثُمَّ قُتِلَ كَيۡفَ قَدَّرَ ۙ﴿۲۰﴾ ثُمَّ نَظَرَ ۙ﴿۲۱﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَ بَسَرَ ۙ﴿۲۲﴾ ثُمَّ اَدۡبَرَ وَ اسۡتَكۡبَرَ ۙ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا سِحۡرٌ
يُّؤۡثَرُ ۙ﴿۲۴﴾ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا قَوۡلُ الۡبَشَرِ ؕ﴿۲۵﴾ سَاُصۡلِيۡهِ سَقَرَ ﴿۲۶﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا سَقَرُ ؕ﴿۲۷﴾ لَا تُبۡقِیۡ وَ لَا تَذَرُ ۚ﴿۲۸﴾ لَوَّاحَةٌ
لِّلۡبَشَرِ ۚۖ﴿۲۹﴾ عَلَيۡهَا تِسۡعَةَ عَشَرَ ؕ﴿۳۰﴾ وَ مَا جَعَلۡنَاۤ اَصۡحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّ مَا جَعَلۡنَا عِدَّتَهُمۡ اِلَّا فِتۡنَةً
لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ۙ لِيَسۡتَيۡقِنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ وَ يَزۡدَادَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِيۡمَانًا وَّ لَا يَرۡتَابَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ وَ
الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ وَ لِيَقُوۡلَ الَّذِيۡنَ فِیۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّ الۡكٰفِرُوۡنَ مَا ذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ
مَنۡ يَّشَآءُ وَ يَهۡدِیۡ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَ مَا يَعۡلَمُ جُنُوۡدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ مَا هِیَ اِلَّا ذِكۡرٰى لِلۡبَشَرِ ﴿۳۱﴾

आयत नं० 01 से 31

ऐ कपड़े में लिपटने वाले (नबी)(01) **उठो** (यानी तैयार हो जाओ) **फिर** (काफ़िरों को अज़ाब से) **डराओ** (जो कि पैग़म्बर की ज़िम्मेदारी है)(02) **और अपने रब की बड़ाइयां करो** (कि तबलीग़ में सबसे पहली चीज़ तौहीद है)(03) **और** (आगे कुछ ज़रूरी बातें बताई गई हैं जिन पर ख़ुद भी चलना है और दूसरों को भी सिखाना है एक तो) **अपने कपड़े को पाक रखिए**(04) **और** (दूसरे यह कि) **बुतों से अलग रहो** (जिस तरह कि अब तक अलग हो)(05) **और किसी को इस नीयत से मत दो कि** (दूसरे वक़्त) **ज़्यादा बदला चाहो**(06) **और** (तबलीग़ में जो तकलीफ़ें आएं उन पर)

अपने रब (को राज़ी करने) **के वास्ते सब्र कीजिए(07) फिर** (इस नसीहत के बाद जो कोई ईमान न लाए उसके लिए धमकी है कि) **जिस वक़्त सूर फूंका जाएगा(08) तो वो दिन बड़ा सख़्त दिन होगा(09) काफ़िरों के लिए जिसमें ज़रा आसानी न होगी(10)** (आगे कुछ ख़ास काफ़िरों का ज़िक्र है यानी) **मुझको और उस आदमी को** (अपने-अपने हाल पर) **रहने दो** (कि हम उससे निमट लेंगे) **जिसको मैंने** (माल व औलाद से ख़ाली और) **अकेला पैदा किया** (जैसा कि पैदा होने के वक़्त आदमी के पास न माल होता है न औलाद यहां मुराद इससे वलीद बिन मुग़य्यरा है जो बहुत माल और औलाद वाला था)(11) **और उसको बहुत सा माल दिया(12) और पास रहने वाले बेटे** (दिये)(13) **और सब तरह का सामान उसको दिया(14) फिर भी** (इसके बावजूद उस माल व औलाद का शुक्र अदा न किया कि ईमान ले आता बल्कि इस नेमत को कम समझ कर) **इस बात का लालच रखता है कि** (उसको) **और ज़्यादा दूं(15) हरगिज़** (वो ज़्यादा देने के क़ाबिल) **नहीं,** (क्योंकि) **वो हमारी आयतों का मुख़ालिफ़** (है इस आयत के उतरने के बाद उस आदमी की तरक़्क़ी बन्द हो गई फिर न कोई औलाद हुई न कुछ माल बढ़ा और यह सज़ा तो दुनिया में) **है(16)** (और आख़रत में) **उसको जल्दी ही** (यानी मरने के बाद) **दोज़ख़ के पहाड़ पर चढ़ाऊंगा** (हदीस में है कि दोज़ख़ में एक पहाड़ है सत्तर साल में उसकी चोटी पर पहुंचेगा फिर वहां से गिर पड़ेगा फिर इसी तरह सदा चढ़ेगा और गिरेगा)(17) **उस आदमी ने** (इस बारे में) **सोचा** (कि क़ुरआन के बारे में क्या बात बनाई जाए) **फिर** (सोच कर) **एक बात बनाई** (जिस का बयान आगे आता है)(18) **तो उस पर ख़ुदा की मार हो कैसी बात बनाई(19) फिर उस पर ख़ुदा की मार हो कैसी बात बनाई(20) फिर** (लोगों के चेहरों को) **देखा** (कि वो बनाई हुई बात उनसे कहूं)(21) **फिर मुंह बनाया** (ताकि देखने वाले समझें कि उसको क़ुरआन से बहुत नफ़रत है फिर) **और ज़्यादा मुंह बनाया(22) फिर मुंह फेरा और घमन्ड किया** (जैसा आदत है कि जिस चीज़ से नफ़रत होती है उससे मुंह फेर लेते हैं)(23) **फिर बोला बस यह तो एक जादू है** (जो पहले से) **चला आता है(24) बस यह तो आदमी का कलाम है** (जिसको आप किसी जादूगर से नक़ल कर देते हैं मतलब यह कि अल्लाह का कलाम नहीं)(25) **मैं उस को जल्दी दोज़ख़ में दाख़िल करूंगा(26) और तुम को कुछ ख़बर है कि दोज़ख़ कैसी चीज़ है(27)** (वो ऐसी है कि) **न तो** (किसी दोज़ख़ी की कोई चीज़ जलाने से) **बाक़ी रहने देगी और न** (किसी काफ़िर को अपने अन्दर लिए बिना) **छोड़ेगी(28)** (और) **वो** (जलाकर) **बदन की सूरत बिगाड़ देगी(29)** (और) **उस पर उन्नीस फ़रिशते तैनात होंगे** (जो काफ़िरों को तरह-तरह का अज़ाब देंगे)(30) **और** (काफ़िरों ने जो दोज़ख़ के पहरेदार फ़रिशतों की गिनती सुनकर

हंसी उड़ाई तो जानलें कि) **हमने दोज़ख़ के पहरेदार** (आदमी नहीं बल्कि) **सिर्फ़ फ़रिशते बनाए हैं** (जिनमें से एक-एक फ़रिशता सभी इन्सानों व जिन्नात की बराबर ताक़त रखता है), **और हमने जो उनकी गिनती** (बताने में) **सिर्फ़** (उन्नीस) **ऐसी रक्खी है जो काफ़िरों की गुमराही का सामान हो** (और) **ताकि किताब वाले** (सुनने के साथ) **यक़ीन करलें और ईमान वालों का ईमान और बढ़ जाए और किताब वाले** (यानी तौरेत व इन्जील को मानने वाले) **और मोमिन लोग शक न करें और ताकि जिन लोगों के दिलों में** (शक की) **बीमारी है वो और काफ़िर लोग कहने लगें कि भला इस अजीब बात से अल्लाह की क्या मुराद है,** (जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों को इस बारे में हिदायत की और काफ़िरों को इस बारे में गुमराह किया) **इसी तरह अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसको चाहता है हिदायत कर देता है, और** (जहन्नम के फ़रिशतों के उन्नीस बताने में भेद हैं वर्ना) **तुम्हारे रब की** (उन) **फ़ौजों** (की यानी फ़रिशतों की गिनती इतनी ज़्यादा है कि उस) **को सिवाए रब के कोई नहीं जानता** (क्योंकि उन्नीस फ़रिशते तो वहां के सरदार हैं और उनके मददगार बहुत ज़्यादा हैं), **और दोज़ख़** (का हाल बयान करना) **तो सिर्फ़ आदमियों की नसीहत के लिए है** (ताकि वहां के अज़ाब को सुनकर डरें और ईमान लाएं)(31)।

नोटः- ऊपर आयतों में जिस वलीद बिन मुग़य्यरा का ज़िक्र है उसने जब क़ुरआन सुना तो यह कहा कि यह इन्सान का कलाम नहीं यानी अल्लाह की तरफ़ से है और क़ुरआन की बहुत तारीफ़ें की लेकिन अबूजहल के बहकाने से मुख़ालिफ़ हो गया। और अन्जाम उस का बुरा हुआ।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ
مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾ فِيْ جَنّٰتٍ
يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ
الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾ فَمَا
تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ
قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّآ اِنَّهٗ
تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

आयत नं० 32 से 56

कोई शक नहीं क़सम चान्द की(32) **और रात की जब वो जाने लगे**(33) **और सुबह की जब रौशनी फैल जाए**(34) **कि दोज़ख़ बड़ी भरी चीज़ है**(35) **जो इन्सान के लिए बड़ा डरावा है**(36) **यानी तुम में जो** (भलाई की तरफ़) **आगे बढ़े उसके लिए भी या जो** (भलाई से) **पीछे हटे उसके लिए भी**(37) (आगे लोगों की कुछ हालतों का बयान है कि) **हर आदमी अपने** (कुफ़्र के) **कामों के बदले में** (दोज़ख़ में) **गरिफ़्तार होगा**(38) **सिवाए दाहिने हाथ वालों** (के यानी मोमिनों) **के**(39) **कि वो जन्नतों में होंगे** (और) **हाल पूछते होंगे**(40) **मुजरिमों** (यानी काफ़िरों) **का** (ख़ुद) **उन** (काफ़िरों ही) **से**(41) **कि तुम को दोज़ख़ में किस बात ने दाख़िल किया है**(42) **वो कहेंगे कि हम न तो नमाज़ पढ़ते थे**(43) **और न ग़रीब को** (जिसका हक़ वाजिब था) **खाना खिलाया** (करते थे यानी ग़रीबों की ज़रूरतों पर ख़र्च नहीं) **करते थे**(44) **और** (जो लोग सच्चे दीन को झुटलाने के धन्धे में रहते थे उन) **धन्धों में रहने वालों के साथ हम भी** (उसी दीन के झुटलाने के) **धन्धे में रहा करते थे**(45) **और क़ियामत के दिन को झुटलाया करते थे**(46) **यहां तक कि** (उसी हालत में) **हम को मौत आ गई** (और हम उन हरकतों से बाज़ न आए यानी ख़ातमा उसी नाफ़रमानी पर हुआ इस वजह से हम दोज़ख़ में आए)(47) **तो** (इस हालत में) **सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उनके काम न आएगी** (यानी कोई काफ़िरों की सिफ़ारिश ही न कर सकेगा)(48) **तो उनको क्या हुआ कि इस** (क़ुरआनी) **नसीहत से मुंह मोड़ते हैं**(49) **कि जैसे वो जंगली गधे हैं**(50) **जो शेर से भागे जा रहे हैं**(51) (ये लोग क़ुरआन को काफ़ी नहीं समझते) **बल्कि उनमें हर आदमी यह चाहता है कि उसको खुली हुई** (आसमानी) **चिट्ठियां दी जाएं** (जैसे कुछ काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आप का कहना मानें तो ख़ास आसमान से ऐसी चिट्ठियां आएं जिनमें आप के कहना मानने का हुक्म लिखा हो)(52) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (हो सकता क्योंकि न इसकी ज़रूरत है और न इनके दिल में ईमान लाने का इरादा है), **बल्कि** (वजह यह है कि) **ये लोग आख़रत** (के अज़ाब) **से डरते** (नहीं इसलिए हक़ की तलाश) **नहीं**(53) (अगर मानलो यह मांगे पूरी भी हो जाएं ये तब भी न मानेंगे इसलिए यह) **हरगिज़ नहीं** (हो सकता, बल्कि) **यह क़ुरआन** (ही) **नसीहत** (के लिए काफ़ी है दूसरी चिट्ठियों की ज़रूरत नहीं) **है**(54) **तो** (इस हालत में) **जिसका जी चाहे इससे नसीहत हासिल करे** (और जिसका चाहे न करे जहन्नम में जाए हम को कोई ज़रूरत नहीं कि मांगी हुई चिट्ठियां भेजें)(55) **और** (क़ुरआन के नसीहत होने में इससे शक न किया जाए कि कुछ लोगों को इससे नसीहत नहीं होती बल्कि बात यह है कि)

बिना अल्लाह के चाहे ये लोग नसीहत कुबूल नहीं करेंगे (और इस न चाहने में कुछ भेद हैं लेकिन कुरआन अपने आप में नसीहत ज़रूर है बस इससे नसीहत हासिल करो और अल्लाह का कहना मानो क्योंकि) **वो ही है जिस** (के अज़ाब) **से डरना चाहिए और** (वो ही है) **जो** (बन्दों के गुनाह) **मुआफ़ करता है**(56)।

नोटः- आख़रत में मुसलमानों के लिए भले ही गुनाहगार हों सिफ़ारिश नफ़ा देगी जैसा कि हदीसों से साबित है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि "आख़रत में अल्लाह के फ़रिशते और पैग़म्बर और शहीद हज़रात और नेक लोग गुनाहगारों की सिफ़ारिश करेंगे और वो उनकी सिफ़ारिश से जहन्नम से निकाल लिये जाएंगे"। मगर काफ़िरों के लिए न सिफ़ारिश की इजाज़त होगी न कुबूल होगी। एक हदीस में है कि जो आदमी सिफ़ारिश के हक़ होने ही का इनकार करे या हौज़े कौसर के वजूद का इनकार करे उसका सिफ़ारिश और हौज़े कौसर में कोई हिस्सा नहीं। (मआरिफुल कुरआन)

75-सूरत-क़ियामाः

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '40' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

لَآ اُقۡسِمُ بِيَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ ۙ﴿۱﴾ وَ لَاۤ اُقۡسِمُ بِالنَّفۡسِ اللَّوَّامَةِ ؕ﴿۲﴾ اَيَحۡسَبُ الۡاِنۡسَانُ اَلَّنۡ نَّجۡمَعَ عِظَامَهٗ ؕ﴿۳﴾ بَلٰى
قٰدِرِيۡنَ عَلٰٓى اَنۡ نُّسَوِّىَ بَنَانَهٗ ﴿۴﴾ بَلۡ يُرِيۡدُ الۡاِنۡسَانُ لِيَفۡجُرَ اَمَامَهٗ ۚ﴿۵﴾ يَسۡـَٔلُ اَيَّانَ يَوۡمُ الۡقِيٰمَةِ ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا بَرِقَ
الۡبَصَرُ ۙ﴿۷﴾ وَخَسَفَ الۡقَمَرُ ۙ﴿۸﴾ وَجُمِعَ الشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ ۙ﴿۹﴾ يَقُوۡلُ الۡاِنۡسَانُ يَوۡمَٮِٕذٍ اَيۡنَ الۡمَفَرُّ ۚ﴿۱۰﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ؕ﴿۱۱﴾
اِلٰى رَبِّكَ يَوۡمَٮِٕذِ اۨلۡمُسۡتَقَرُّ ؕ﴿۱۲﴾ يُنَبَّؤُا الۡاِنۡسَانُ يَوۡمَٮِٕذٍۢ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ؕ﴿۱۳﴾ بَلِ الۡاِنۡسَانُ عَلٰى نَفۡسِهٖ بَصِيۡرَةٌ ۙ﴿۱۴﴾ وَّ
لَوۡ اَلۡقٰى مَعَاذِيۡرَهٗ ؕ﴿۱۵﴾ لَا تُحَرِّكۡ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعۡجَلَ بِهٖ ؕ﴿۱۶﴾ اِنَّ عَلَيۡنَا جَمۡعَهٗ وَقُرۡاٰنَهٗ ۚ ۖ﴿۱۷﴾ فَاِذَا قَرَاۡنٰهُ فَاتَّبِعۡ
قُرۡاٰنَهٗ ۚ﴿۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيۡنَا بَيَانَهٗ ؕ﴿۱۹﴾ كَلَّا بَلۡ تُحِبُّوۡنَ الۡعَاجِلَةَ ۙ﴿۲۰﴾ وَتَذَرُوۡنَ الۡاٰخِرَةَ ؕ﴿۲۱﴾ وُجُوۡهٌ يَّوۡمَٮِٕذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ﴿۲۲﴾
اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ﴿۲۳﴾ وَوُجُوۡهٌ يَّوۡمَٮِٕذٍۢ بَاسِرَةٌ ۙ﴿۲۴﴾ تَظُنُّ اَنۡ يُّفۡعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ؕ﴿۲۵﴾ كَلَّاۤ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِىَ ۙ﴿۲۶﴾ وَ
قِيۡلَ مَنۡ ࣞ رَاقٍ ۙ﴿۲۷﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الۡفِرَاقُ ۙ﴿۲۸﴾ وَالۡتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ﴿۲۹﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوۡمَٮِٕذِ اۨلۡمَسَاقُ ؕ﴿۳۰﴾

आयत नं० 01 से 30

मैं क़सम खाता हूं क़ियामत के दिन की(01) और क़सम खाता हूं ऐसे जी की जो अपने को बुरा कहे (यानी नेकी करके भी उसे कम समझे और गुनाह हो जाए तो बहुत पछताए और क़सम इस बात पर कि इन्सान को दोबारा ज़रूर ज़िन्दा करेंगे)**(02) क्या** (काफ़िर) **इन्सान समझता है कि हम** (क़ियामत में) **उसकी हड्डियां** (यानी ढांचा) **हरगिज़ न जमा करेंगे(03)** (आगे इस इनकार का जवाब है यानी) **हम ज़रूर जमा करेंगे** (और यह जमा करना हम को कुछ मुश्किल नहीं क्योंकि) **हमें इस पर** (भी) **कुदरत है कि उसकी उंगलियों के पोर-पोर को ठीक बनाएं(04)** (कुछ आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह की कुदरत के बारे में सोचते नहीं और क़ियामत को नहीं मानते) **बल्कि** (ऐसा) **आदमी** (क़ियामत का इनकार करके) **यह चाहता है कि अपनी आगे की ज़िन्दगी में भी** (निडर होकर) **गुनाह करता रहे(05)** (इसलिए इनकार की राह से) **पूछता है कि क़ियामत का दिन कब**

आएगा(06) तो जिस वक़्त (अचम्भे से) **आंखें फटी रह जाएंगी** (और वजह इस अचम्भे की यह होगी कि जिन चीज़ों को झुटलाया करता था वो अचानक नज़र) **आजाएंगी(07) और चान्द में रौशनी न रहेगी(08) और** (चान्द ही क्या बल्कि) **सूरज और चान्द** (दोनो) **एक हालत के हो जाएंगे** (यानी दोनो में रौशनी न रहेगी)**(09) उस दिन इन्सान कहेगा कि अब किधर भागूं(10)** (लेकिन) **हरगिज़** (भाग) **नहीं** (सकते क्योंकि) **कहीं पनाह की जगह नहीं** (होगी)**(11) उस दिन सिर्फ़ आप ही के रब के पास** (जाने का) **ठिकाना है** (फिर चाहे जन्नत में भेजें या दोज़ख़ में)**(12) उस दिन इन्सान को उसका सब अगला पिछला किया हुआ जिता दिया जाएगा(13)** (और यह ही नहीं) **बल्कि इन्सान अपने सब हाल को ख़ूब जानता होगा(14) चाहे वो** (उस वक़्त भी) **कितने ही बहाने बनाए(15)** (और) **ऐ पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब वही उतरा करे तो) **आप** (वही पूरी होने से पहले) **कुरआन पर अपनी ज़बान न हिलाया कीजिए ताकि आप उसको जल्दी-जल्दी** (याद कर) **लें(16)** (क्योंकि) **हमारे ज़िम्मे है** (आप के दिल में) **उसका जमा कर देना** (यानी याद करा देना) **और** (आप की ज़बान से) **उसका पढ़वा देना(17) तो जब हम उसको पढ़ने लगा करें** (यानी हमारा फ़रिशता पढ़ने लगा करे) **तो उसके ताबे हो जाया** (कीजिए यानी उधर ही ध्यान किया कीजिए और साथ-साथ न पढ़ा) **कीजिए(18) फिर** (आप की ज़बान से लोगों के सामने) **उसका बयान करा देना** (यानी आप को याद करा देना और लोगों के सामने पढ़वा देना सब) **हमारे ज़िम्मे है(19)** (और ऐ काफ़िरों जैसा तुम समझ रहे हो कि क़ियामत न आएगी) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (और न तुम्हारे पास इसके इनकार की कोई दलील है) **बल्कि** (सिर्फ़ बात यह है कि) **तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो(20) और** (उसकी मुहब्बत में खपकर) **आख़रत को भूले हुए हो(21)** (बस जब क़ियामत आएगी तो) **बहुत से चेहरे तो उस दिन खिले होंगे(22)** (और) **अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे(23) और बहुत से चेहरे उस दिन उदास होंगे(24)** (और वो लोग) **सोच रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला बरताव किया जाएगा** (यानी उसको सख़्त अज़ाब होगा)**(25) हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (जैसा कि तुम समझते हो बल्कि दुनिया से एक दिन जुदाई होने वाली है और आख़िरकार आख़रत में जाना है कि) **जब जान हंसली तक पहुंच जाती है(26) और** (बहुत नाउम्मीदी से उस वक़्त) **कहा जाता है** (यानी पास वाले कहते हैं) **कि** (अरे) **कोई झाड़** (फूंक कर) **ने वाला भी है** (यानी दवा इलाज से मजबूर होकर झाड फूंक करने वाले को तलाश करने लगते हैं)**(27) और** (उस वक़्त) **वो** (मरने वाला) **यक़ीन कर लेता है कि यह** (दुनिया से) **जुदाई का वक़्त है(28) और** (मौत की सख़्ती से) **एक पिन्डली दूसरी पिन्डली से लिपट-लिपट जाती** (है यानी मौत की निशानी आ जाती)

है(29) (जब ये हालतें सामने आ जाती हैं तो ऐ इन्सान) **उस दिन तेरे रब की तरफ़ जाना होता है**(30)।

नोटः- जब हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम क़ुरआन की कुछ आयतें लेकर आते और उनको पढ़ते तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सोच कर कि कहीं कुछ भूल न लग जाए उनके पढ़ने के साथ-साथ दोहराने लगते थे। अल्लाह की तरफ़ से उनको इस महनत से रोक दिया गया कि साथ-साथ न पढ़ा करें बल्कि बाद में पढ़ा करें क्योंकि क़ुरआन को याद करा देना और ठीक-ठीक पढ़वा देना हमारी ज़िम्मेदारी है। इसलिए आप इसकी फ़िक्र छोड़ दें।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ﴿٣١﴾ وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٣٢﴾ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ﴿٣٣﴾ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٤﴾ ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ
فَأَوْلَىٰ ﴿٣٥﴾ أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾ أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ﴿٣٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ
فَسَوَّىٰ ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٣٩﴾ أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾

आयत नं० 31 से 40

फिर (अल्लाह के पास पहुंचने के बाद अगर वो काफ़िर है तो उस का बुरा हाल होगा क्योंकि) **न तो वो** (अल्लाह व रसूल पर) **यक़ीन लाया था और न नमाज़ पढ़ी थी**(31) **लेकिन** (अल्लाह और रसूल को) **झुटलाया था और** (हुक्मों से) **मुंह मोड़ा था**(32) **फिर** (नसीहत करने वालों से मुंह फेर कर) **अकड़ दिखाता हुआ अपने घर चल देता** (था मतलब यह कि एक तो कुफ़्र और गुनाह फिर उस पर पछतावा नहीं बल्कि और उल्टा घमन्ड करता) **था**(33) (ऐसे आदमी से कहा जाएगा कि) **तेरी बर्बादी पर बर्बादी आने वाली है**(34) **फिर** (दोबारा सुन ले कि) **तेरी बर्बादी पर बर्बादी आने वाली है**(35) **क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूं ही छोड़ दिया जाएगा** (न उस पर हुक्म जारी किये जाएंगे और न उससे हिसाब किताब होगा बल्कि ये दोनों बातें यक़ीनी हैं)(36) **क्या यह आदमी** (शुरू में सिर्फ़) **मनी की एक बून्द नहीं था जो** (औरत की बच्चेदानी में) **टपकाया गया था**(37) **फिर वो जमा हुआ ख़ून बन गया फिर अल्लाह तआला ने उसे** (इन्सान) **बनाया फिर जिस्म के हिस्से ठीक किये**(38) **फिर उस** (इन्सान) **की दो क़िस्में कर दीं मर्द और औरत**(39) (तो) **क्या वो** (अल्लाह जिसने शुरू में अपनी क़ुदरत से यह सब कुछ किया) **इस बात पर क़ुदरत नहीं रखता कि** (क़ियामत में) **मुर्दों को ज़िन्दा करे** (हालांकि दोबारा पैदा करना पहले

पैदा करने से आसान है)(40)

नोटः- हदीस में है कि जो आदमी सूरत क़ियामा की आख़री आयत की तिलावत करे तो उस को यह कहना चाहिए-

''बला व अना अला ज़ालिक् मिनश्शाहिदीन''

ऊपर आयतों से यह भी मालूम हुआ कि जन्नती लोगों को आख़रत में अल्लाह तआ़ला का दीदार नसीब होगा। अलबत्ता उनके दर्जे अलग-अलग होंगे। कुछ को यह ज़ियारत हफ़्तेवार जुमा को हासिल होगी कुछ को रोज़ाना सुबह व शाम और कुछ के लिए हर वक़्त हर हाल में रहेगी।

(मज़हरी)

76-सूरत-दहर

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '31' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

هَلۡ اَتٰی عَلَی الۡاِنۡسَانِ حِیۡنٌ مِّنَ الدَّهۡرِ لَمۡ یَکُنۡ شَیۡـًٔا مَّذۡکُوۡرًا ﴿۱﴾ اِنَّا خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ نُّطۡفَةٍ اَمۡشَاجٍ ٭ۖۤ
نَّبۡتَلِیۡهِ فَجَعَلۡنٰهُ سَمِیۡعًۢا بَصِیۡرًا ﴿۲﴾ اِنَّا هَدَیۡنٰهُ السَّبِیۡلَ اِمَّا شَاکِرًا وَّ اِمَّا کَفُوۡرًا ﴿۳﴾ اِنَّاۤ اَعۡتَدۡنَا لِلۡکٰفِرِیۡنَ سَلٰسِلَاۡ وَ
اَغۡلٰلًا وَّ سَعِیۡرًا ﴿۴﴾ اِنَّ الۡاَبۡرَارَ یَشۡرَبُوۡنَ مِنۡ کَاۡسٍ کَانَ مِزَاجُهَا کَافُوۡرًا ﴿۵﴾ۚ عَیۡنًا یَّشۡرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ
یُفَجِّرُوۡنَهَا تَفۡجِیۡرًا ﴿۶﴾ یُوۡفُوۡنَ بِالنَّذۡرِ وَ یَخَافُوۡنَ یَوۡمًا کَانَ شَرُّهٗ مُسۡتَطِیۡرًا ﴿۷﴾ وَ یُطۡعِمُوۡنَ الطَّعَامَ عَلٰی حُبِّهٖ
مِسۡکِیۡنًا وَّ یَتِیۡمًا وَّ اَسِیۡرًا ﴿۸﴾ اِنَّمَا نُطۡعِمُکُمۡ لِوَجۡهِ اللّٰهِ لَا نُرِیۡدُ مِنۡکُمۡ جَزَآءً وَّ لَا شُکُوۡرًا ﴿۹﴾ اِنَّا نَخَافُ مِنۡ رَّبِّنَا
یَوۡمًا عَبُوۡسًا قَمۡطَرِیۡرًا ﴿۱۰﴾ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِکَ الۡیَوۡمِ وَ لَقّٰهُمۡ نَضۡرَةً وَّ سُرُوۡرًا ﴿۱۱﴾ۚ وَ جَزٰهُمۡ بِمَا صَبَرُوۡا جَنَّةً وَّ
حَرِیۡرًا ﴿۱۲﴾ۙ مُّتَّکِـِٕیۡنَ فِیۡهَا عَلَی الۡاَرَآئِکِ ۚ لَا یَرَوۡنَ فِیۡهَا شَمۡسًا وَّ لَا زَمۡهَرِیۡرًا ﴿۱۳﴾ۚ وَ دَانِیَةً عَلَیۡهِمۡ ظِلٰلُهَا وَ ذُلِّلَتۡ
قُطُوۡفُهَا تَذۡلِیۡلًا ﴿۱۴﴾ وَ یُطَافُ عَلَیۡهِمۡ بِاٰنِیَةٍ مِّنۡ فِضَّةٍ وَّ اَکۡوَابٍ کَانَتۡ قَوَارِیۡرَا۠ ﴿۱۵﴾ۙ قَوَارِیۡرَا۠ مِنۡ فِضَّةٍ قَدَّرُوۡهَا
تَقۡدِیۡرًا ﴿۱۶﴾ وَ یُسۡقَوۡنَ فِیۡهَا کَاۡسًا کَانَ مِزَاجُهَا زَنۡجَبِیۡلًا ﴿۱۷﴾ۚ عَیۡنًا فِیۡهَا تُسَمّٰی سَلۡسَبِیۡلًا ﴿۱۸﴾ وَ یَطُوۡفُ عَلَیۡهِمۡ
وِلۡدَانٌ مُّخَلَّدُوۡنَ ۚ اِذَا رَاَیۡتَهُمۡ حَسِبۡتَهُمۡ لُؤۡلُؤًا مَّنۡثُوۡرًا ﴿۱۹﴾ وَ اِذَا رَاَیۡتَ ثَمَّ رَاَیۡتَ نَعِیۡمًا وَّ مُلۡکًا کَبِیۡرًا ﴿۲۰﴾
عٰلِیَهُمۡ ثِیَابُ سُنۡدُسٍ خُضۡرٌ وَّ اِسۡتَبۡرَقٌ ۫ وَّ حُلُّوۡۤا اَسَاوِرَ مِنۡ فِضَّةٍ ۚ وَ سَقٰهُمۡ رَبُّهُمۡ شَرَابًا طَهُوۡرًا ﴿۲۱﴾ اِنَّ
هٰذَا کَانَ لَکُمۡ جَزَآءً وَّ کَانَ سَعۡیُکُمۡ مَّشۡکُوۡرًا ﴿۲۲﴾ ع

आयत नं० 01 से 22

बेशक इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त भी आ चुका है जिसमें उसका नामो निशान न (था यानी इन्सान न था बल्कि मनी की बून्द था और उससे पहले ख़ुराक की चीज़ों की सूरत में) **था(01) हमने उसको** (मर्द व औरत की) **मिली जुली मनी से पैदा किया फिर उसे ऐसा बनाया**

कि सुनता भी है देखता भी (है यानी समझ बूझ भी दी) **है(02)** (फिर) **हमने उस को** (पैग़म्बरों और किताबों के वास्ते से भलाई बुराई का) **रास्ता दिखाया** (और हुक्म जारी किये फिर) **या तो शुक्र करने वाला** (और मोमिन) **हो गया या नाशुक्रा** (और काफ़िर होगया यानी जिस रास्ते पर चलने को उसको कहा था जो उस पर चला वो मोमिन हो गया और जो बिल्कुल न चला वो काफ़िर) **हो गया(03)** (आगे दोनों के अन्जाम का बयान है कि) **हमने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें और गले के पट्टे और भड़कती हुई आग तैयार कर रक्खी है(04)** (और) **जो नेक** (लोग) **हैं वो ऐसे पियालों से** (शराबें) **पियेंगे जिसमें काफ़ूर की मिलावट** (होगी और यह काफ़ूर वहां की) **होगी(05) यानी ऐसी नहरों से** (पियेंगे) **जिससे अल्लाह के ख़ास बन्दे पियेंगे** (और) **जिसको वो** (ख़ास बन्दे जहां चाहेंगे) **बहाकर ले जाएंगे** (और यह जन्नती लोगों की करामत होगी कि जन्नत की नहरें उनके ताबे होंगी)**(06) वो लोग** (ऐसे हैं कि) **अपने वाजिबों** (और मन्नतों) **को पूरा करते हैं और** (अदा भी सच्चे मन से करते हैं क्योंकि वो) **ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती आम होगी** (यानी कम व ज़्यादा सब पर उसकी सख़्ती का असर होगा मगर जिसे अल्लाह चाहे मुराद क़ियामत का दिन है)**(07) और वो लोग** (नीयत के ऐसे सच्चे हैं कि सिर्फ़) **अल्लाह की मुहब्बत से ग़रीब और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं(08)** (और वो लोग खाना खिलाकर ज़बान से या दिल से यह कहते हैं कि) **हम तुम को सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए खाना खिलाते हैं, न हम तुम से** (इसका कोई) **बदला चाहते हैं और न** (उसका ज़बानी) **शुक्रिया** (चाहते हैं)**(09) हम** (अल्लाह को राज़ी करने के लिए इस वास्ते तुम को खाना खिलाते हैं कि हम) **अपने रब की तरफ़ से एक उदास कर देने वाले सख़्त दिन का ख़तरा रखते हैं** (तो उम्मीद है कि इन नेक कामों की वजह से उस दिन की सख़्ती से बचे रहें)**(10) तो अल्लाह तआ़ला उनको** (इस ताबेदारी व मन की सच्चाई की बरकत से) **उस दिन की सख़्ती से बचाएगा और उनको ताज़गी और ख़ुशी** (देगा यानी चेहरों पर ताज़गी और दिल में ख़ुशी) **देगा(11) और उनकी** (दीन पर) **मज़बूती के बदले में उनको जन्नत और रेशमी लिबास देगा(12) इस हालत में कि वो वहां** (जन्नत में) **मसहरियों पर** (इज़्ज़त से) **तकिया लगाए हुए** (आराम करते) **होंगे** (और) **न वहां तपिश** (और गर्मी) **पाएंगे और न ज़्यादा सर्दी** (बल्कि सुहाना मौसम होगा)**(13) और यह हालत होगी कि** (वहां के यानी जन्नत के) **पेड़ों के साए उन** (जन्नती लोगों) **पर झुके होंगे** (यानी नज़दीक होंगे) **और उन के फल उनके बस में होंगे** (कि हर वक़्त हर तरह बिना मेहनत ले सकेंगे)**(14) और उन के पास** (खाने पीने की चीज़ें पहुंचाने के लिए) **चान्दी के बर्तन लाए जाएंगे और पियाले जो शीशे के होंगे(15)** (और) **वो**

शीशे चान्दी के होंगे जिनको भरने वालों ने ठीक हिसाब से भरा होगा (कि न कमी रहे और न बचे, और चान्दी के शीशे का मतलब यह कि सफ़ेदी तो चान्दी जैसी और सफ़ाई शीशे जैसी कि आर पार दिखाई दे दुनिया में ऐसे शीशे नहीं होते)(16) **और वहां उनको** (एक) **ऐसा** (भी) **जामे शराब पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी**(17) **यानी ऐसी नहर से** (उन को पिलाया जाएगा) **जिसका नाम** (वहां) **सलसबील** (मशहूर) **होगा**(18) **और उनके पास** (ये चीज़ें लेकर) **ऐसे लड़के आते जाते होंगे जो सदा लड़के ही रहेंगे,** (और वो ऐसे हसीन हैं कि) **अगर आप उनको** (चलते फिरते) **देखें तो ऐसा लगे कि वो मोती हैं जो बिखर गये हैं**(19) (और वहां और भी ऐश के सामान होंगे कि) **अगर तुम उस जगह को देखो तो तुम को बड़ी नेमत और बड़ी बादशाही दिखाई दे**(20) (और) **उन जन्नतियों पर बारीक रेशम के हरे कपड़े होंगे और भारी रेशम के कपड़े होंगे** (क्योंकि हर लिबास का अलग मज़ा है), **और उनको चान्दी के कंगन पहनाए जाएंगे और उनका रब** (जो शराब पीने को देगा तो) **उनको पाक शराब पीने को देगा** (जिसमें न गन्दगी होगी और न नशा होगा)(21) **यह तुम्हारा इनआम है और तुमने** (दुनिया में) **जो मेहनत की थी कुबूल हुई** (यह कह कर उन को ख़ुश कर दिया जाएगा)(22)।

नोटः- मन्नत के वाजिब होने के लिए यह ज़रूरी है कि वो गुनाह का काम न हो दूसरे जिस काम की मन्नत मानी जाए वो किसी इबादत की जिन्स से हो जैसे नमाज़, रोज़ा, सदक़ा व कुर्बानी वग़ैरह।

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا عَلَیۡكَ الۡقُرۡاٰنَ تَنۡزِیۡلًا ۚ﴿۲۳﴾ فَاصۡبِرۡ لِحُكۡمِ رَبِّكَ وَ لَا تُطِعۡ مِنۡهُمۡ اٰثِمًا اَوۡ كَفُوۡرًا ۚ﴿۲۴﴾ وَ اذۡكُرِ اسۡمَ
رَبِّكَ بُكۡرَةً وَّ اَصِیۡلًا ۚۖ﴿۲۵﴾ وَ مِنَ الَّیۡلِ فَاسۡجُدۡ لَهٗ وَ سَبِّحۡهُ لَیۡلًا طَوِیۡلًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ یُحِبُّوۡنَ الۡعَاجِلَةَ وَ یَذَرُوۡنَ
وَرَآءَهُمۡ یَوۡمًا ثَقِیۡلًا ﴿۲۷﴾ نَحۡنُ خَلَقۡنٰهُمۡ وَ شَدَدۡنَاۤ اَسۡرَهُمۡ ۚ وَ اِذَا شِئۡنَا بَدَّلۡنَاۤ اَمۡثَالَهُمۡ تَبۡدِیۡلًا ﴿۲۸﴾ اِنَّ هٰذِهٖ
تَذۡكِرَةٌ ۚ فَمَنۡ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰی رَبِّهٖ سَبِیۡلًا ﴿۲۹﴾ وَ مَا تَشَآءُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ یَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِیۡمًا حَكِیۡمًا ۖۗ﴿۳۰﴾
یُّدۡخِلُ مَنۡ یَّشَآءُ فِیۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ وَ الظّٰلِمِیۡنَ اَعَدَّ لَهُمۡ عَذَابًا اَلِیۡمًا ﴿۳۱﴾

आयत नं० 23 से 31

(ऐ पैग़म्बर) **हमने आप पर यह कुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है** (ताकि थोड़ा-थोड़ा लोगों को पहुंचाते रहें और उनको उससे फ़ाइदा उठाने में आसानी हो)(23) **तो आप अपने रब के**

हुक्म पर जमे रहिए (कि उसमें तबलीग़ भी आगई) **और उनमें से किसी बड़े गुनाहगार या काफ़िर की बात** (न मानिए यानी जो तबलीग़ से मना करते हैं उनका कहना) **न मानिए(24) और अपने रब का सुबह शाम नाम लिया कीजिए(25) और रात के कुछ हिस्से में भी उसको सजदा कीजिए** (यानी फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ा कीजिए) **और रात के बड़े हिस्से में उसकी तस्बीह किया** (कीजिए यानी तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा) **कीजिए(26)** (और इन लोगों की आप के साथ मुख़ालफ़त की असली वजह यह है कि) **ये लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे** (आने) **वाले एक भारी दिन को छोड़ बैठे** (हैं बस दुनिया की मुहब्बत ने अन्धा कर रक्खा है इसलिए हक़ बात से दुशमनी रखते) **हैं(27)** (और भारी दिन यानी क़ियामत का वो इनकार करते थे इसलिए बताते हैं कि) **हम ही ने उनको पैदा किया और हम ही ने उनके जोड़ बन्द मज़बूत किये और** (ऐसे ही) **जब हम चाहेंगे उन्ही जैसे लोग उनकी जगह बदल दें** (फिर मुर्दों को दो बारा ज़िन्दा करने में कौन बात ज़्यादा मुश्किल है कि वो न कर सकें)(28) **यह** (सब जो बताया गया एक) **नसीहत** (की बात) **है सो जो आदमी चाहे अपने रब की तरफ़** (जाने वाला) **रास्ता चुन ले(29) और** (क़ुरआन के नसीहत होने में इससे शक न किया जाए कि कुछ लोगों को इससे हिदायत नहीं होती बात यह है कि) **बिना अल्लाह के चाहे तुम लोग कोई बात चाह ही नहीं सकते,** (और कुछ लोगों के लिए अल्लाह के न चाहने में कुछ भेद होते हैं क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला बड़ा इल्म वाला और हिकमत वाला है(30) वो जिस को चाहे अपनी रहमत में ले लेता है, और** (जिसको चाहे कुफ़्र और ज़ुल्म में गरिफ़्तार रखता है फिर) **ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैार कर रक्खा है**(31)।

नोटः- दुनिया में ज़ेवर औरतों के लिए होते हैं मगर जन्नत में मर्दों के लिए भी शान की चीज़ होंगे। यह ख़ास बात जन्नत की होगी।

77-सूरत-मुरसलात

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '50' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ الْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۙ﴿۱﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ﴿۲﴾ وَّ النّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ﴿۳﴾ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ﴿۴﴾ فَالْمُلْقِیٰتِ
ذِكْرًا ۙ﴿۵﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ﴿۶﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿۷﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ﴿۸﴾ وَ اِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ﴿۹﴾ وَ اِذَا
الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ﴿۱۰﴾ وَ اِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ﴿۱۱﴾ لِاَیِّ یَوْمٍ اُجِّلَتْ ؕ﴿۱۲﴾ لِیَوْمِ الْفَصْلِ ۚ﴿۱۳﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا یَوْمُ
الْفَصْلِ ؕ﴿۱۴﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِیْنَ ؕ﴿۱۶﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِیْنَ ﴿۱۷﴾ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۸﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِیْنٍ ۙ﴿۲۰﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِیْ قَرَارٍ مَّكِیْنٍ ۙ﴿۲۱﴾
اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۙ﴿۲۲﴾ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۲۴﴾

आयत नं० 01 से 24

क़सम है उन हवाओं की जो नफ़ा पहुंचाने के लिए भेजी जाती हैं(01) **फिर उन हवाओं की जो** (आंधी बनकर) **तेज़ी से चलती हैं** (जिनसे ख़तरा रहता है)(02) **और उन हवाओं की जो बादलों को** (उठाकर) **फैलाती हैं** (जिसके बाद बारिश होने लगती है)(03) **फिर उन हवाओं की जो बादलों को तितर-बितर कर देती हैं** (जैसा बारिश के बाद होता है)(04) **फिर उन हवाओं की जिन से** (दिलमें) **अल्लाह की याद पैदा होती है**(05) **या डर पैदा करती हैं जिससे तौबा का ध्यान आता है**(06) (आगे क़सम का जवाब है) **कि जिस चीज़ का तुम से वादा किया जाता है वो ज़रूर होने वाली है** (यानी क़ियामत)(07) **तो** (क़ियामत उस वक़्त आएगी) **जब सितारों में रौशनी न रहेगी**(08) **और जब आसमान फट जाएगा**(09) **और जब पहाड़** (चूरा-चूरा होकर) **उड़ते फिरेंगे**(10) **और जब पैग़म्बरों के जमा होने का वक़्त आ**(जाएगा उस वक़्त सब का फ़ैसला हो)**जाएगा**(11) (क्या आप को मालूम है) **किस दिन के लिए पैग़म्बरों के मुआमले में देरी है**(12) (आगे जवाब है कि) **फ़ैसले के दिन के लिए** (यह देरी है)(13) **और** (आगे उस फ़ैसले के दिन की

सख़्ती का बयान है कि) **आप को मालूम है कि वो फ़ैसले का दिन कैसा** (है यानी बहुत सख़्त) **है** (14) (और जो लोग उस सच्चाई को झुटला रहे हैं वो समझलें कि) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी**(15) (और) **क्या हमने पहले** (काफ़िर) **लोगों को** (अज़ाब से) **हलाक नहीं किया**(16) **फिर बाद वालों को भी** (अज़ाब में) **उन** (पहलों) **ही के साथ-साथ कर देंगे** (यानी आप की उम्मत के काफ़िरों पर भी मुसीबत का वबाल भेजेंगे जैसा जंगे बद्र में हुआ)(17) **हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही** (सलूक) **किया करते** (हैं चाहे दोनो जहान में चाहे सिर्फ़ आख़रत में उनके कुफ़्र पर सज़ा देते) **हैं**(18) (और जो इस हक़ बात को झुटलाते हैं समझ रक्खें कि) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी**(19) **क्या हमने तुम को एक बेक़द्र पानी** (यानी मनी) **से नहीं बनाया** (यानी शुरू में तुम मनी की बून्द थे)(20) **फिर हमने उस को एक हिफ़ाज़त की जगह** (यानी औरत की बच्चे दानी) **में रक्खा**(21) **एक तय वक़्त तक** (की मुद्दत) **के लिए**(22) (इन सब कामों का) **एक अन्दाज़ा ठहराया सो हम कैसे अच्छे अन्दाज़ा ठहराने वाले** (हैं तो इससे साबित हुआ कि मुर्दों को ज़िन्दा कर सकते) **हैं**(23) (बस जो लोग इस मुर्दों के ज़िन्दा करने को झुटलाते हैं) **उस दिन** (उन) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी**(24)।

नोटः- पहली उम्मतों पर आसमानी अज़ाब आता था जिससे काफ़िरों की पूरी बस्तियां तबाह हो जाती थीं। हुज़ूर की उम्मत का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वजह से यह ख़ास इकराम है कि उनके काफ़िरों पर आम आसमानी अज़ाब नहीं आता और आम लोग हलाक नहीं होते बल्कि सिर्फ़ बड़े सरकश मुजरिम ही मारे जाते हैं।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾ انْطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾ انْطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَا
ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ
لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾ هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾ هَٰذَا
يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

आयत नं० 25 से 40

क्या हमने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया(25) यानी ज़िन्दों और मुर्दों को (समेटने वाली)(26) **और हमने उस** (ज़मीन) **में ऊंचे-ऊंचे पहाड़ बनाए** (जिनसे बहुत से नफ़े जुड़े हैं) **और हमने तुम को मीठा पानी पिलाया(27)** (और ये सब नेमतें एक अल्लाह की दी हुई हैं बस जो लोग इस सच्चाई यानी तौहीद को झुटलाते हैं वो समझ लें कि) **उस दिन** (सच्चाई के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(28)** (आगे क़ियामत की कुछ सज़ाओं का ज़िक्र है यानी क़ियामत के दिन काफ़िरों से कहा जाएगा कि) **तुम उस अज़ाब की तरफ़ चलो जिसको झुटलाया करते थे(29) चलो उस सायबान की तरफ़ जो तीन शाख़ों वाला है(30) जिसमें न** (ठन्डा) **साया है और न वो गर्मी से बचाता है** (मुराद उस सायबान से एक धुवां है जो जहन्नम से निकलेगा और चूंकि बहुत ज़्यादा होगा इसलिए ऊंचा होकर फटकर तीन टुकड़े हो जाएंगे और हिसाब पूरा होने तक काफ़िर उसी धुएं के घेरे में रहेंगे जब कि नेक लोग अर्श के साए में रहेंगे)(31) **वो** (धुवां) **अंगारे बरसाएगा जैसे बड़े-बड़े महल(32) जैसे काले-काले ऊंट** (जब चिंगारी आग से झड़ती है तो बड़ी होती है फिर बहुत से छोटे टुकड़े होकर ज़मीन पर गिरती है तो शुरू में अंगारे महल जैसे फिर छोटे-छोटे होकर ऊंट जैसे हो जाएंगे)(33) **उस दिन** (इस फ़ैसले के दिन को) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(34) यह वो दिन होगा जिसमें वो** (यानी काफ़िर) **लोग बोल नहीं सकेंगे(35) और न उनको** (मजबूरी बताने की) **इजाज़त होगी तो मजबूरी भी न बता सकेंगे** (क्योंकि असल में कोई मजबूरी होगी ही नहीं)(36) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(37)** (उन लोगों से कहा जाएगा कि) **यह है फ़ैसले का दिन** (जिस को तुम झुटलाया करते थे) **हम ने** (आज) **तुम को और पहले लोगों को** (फ़ैसले के लिए) **जमा कर लिया(38) अब अगर तुम्हारे पास** (आज के फ़ैसले से बचने का) **कोई दांव है तो मुझ पर वो दांव चला लो(39)** (याद रक्खो) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(40)।**

नोटः- ज़मीन को ज़िन्दों और मुर्दो को समीटने वाली कहा गया क्योंकि ज़िन्दगी इसी पर बसर होती है। और मरने के बाद ज़मीन में ही समा जाते हैं चाहे दफ़नाए जाएं या डूब जाएं या जल कर राख बन जाएं मिट्टी होकर ज़मीन में ही समा जाते हैं। और इस हालत में मौत के बाद का नेमत होना इस तरह है कि अगर मुर्दे मिट्टी न हो जाया करते तो ज़िन्दे परीशान होकर मुर्दों से भी बुरे हाल हो जाते कि उनको अपने बसने बल्कि चलने फिरने की जगह न मिलती।

اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ ظِلٰلٍ وَّ عُیُوْنٍۙ۝۴۱ وَّ فَوَاكِهَ مِمَّا یَشْتَهُوْنَؕ۝۴۲ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِیْٓــٴًـۢا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ۝۴۳ اِنَّا
كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ۝۴۴ وَیْلٌ یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ۝۴۵ كُلُوْا وَ تَمَتَّعُوْا قَلِیْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ۝۴۶ وَیْلٌ
یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ۝۴۷ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا یَرْكَعُوْنَ۝۴۸ وَیْلٌ یَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ۝۴۹ فَبِاَیِّ حَدِیْثٍۭ
بَعْدَهٗ یُؤْمِنُوْنَ۠۝۵۰

आयत नं० 41 से 50

परहेज़गार लोग बेशक सायों में और नहरों में होंगे(41) और अपने मन पसन्द फलों में होंगे(42) (और उनसे कहा जाएगा कि) **अपने** (नेक) **कामों के बदले में ख़ूब मज़े से खाओ और पियो(43) हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं(44)** (मगर) **उस दिन** (इन सच्चाइयों के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(45)** (आगे काफ़िरों से कहा गया है कि ऐ काफ़िरों) **तुम** (दुनिया में) **थोड़े दिन और खा पीलो और आराम बरत लो** (जल्दी ही तुम पर बदनसीबी आने वाली है क्योंकि) **तुम बेशक मुजरिम हो(46)** (और जो लोग जुर्म की सज़ा को झुटलाते हैं जानलें कि) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(47)** (और इन काफ़िरों की सरकशी और जुर्म की यह हालत है कि) **जब उनसे कहा जाता है कि** (अल्लाह की तरफ़) **झुको** (यानी ईमान लाओ और ताबेदारी करो) **तो नहीं झुकते** (इससे ज़्यादा क्या जुर्म होगा)(48) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(49)** (और चाहिए तो यह था कि क़ुरआन की इन आयतों को सुनते ही ईमान ले आते मगर जब इस पर भी उनको असर नहीं) **तो फिर इस** (नसीहत भरे क़ुरआन) **के बाद कौन सी बात पर ईमान लाएंगे(50)।**

नोटः- हदीस में है कि जब तिलावत करने वाला इस आयत पर पहुंचेः **''फ़बि अय्यि हदीसिम बादहू यूमिनून''** तो उसको कहना चाहिए **''आमन्ना बिल्लाहि''** यानी हम अल्लाह पर ईमान ले आए। नमाज़ में ऐसा कहने से अहतियात रक्खे।